CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६.२२४
२१२

8.2

ऋषि मण्डल यंत्र पूजा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

श्री ऋषिमंडल-मंत्रकल्प

...ो निम्नांकित तिथि तक या उसके पूर्व

संपादक व अनुवादक

श्री पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
(विद्यावाचस्पति, व्या. के. विद्यालंकार, समाजरत्न आदि)
कल्याण भवन सोलापूर २

प्रकाशक
धर्मवीर जैन ग्रंथमाला--नियामक.
७५ पूर्व मंगळवार पेठ सोलापूर २

★

प्रति १०००	१९६७	मूल्य १ रुपया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आद्य वक्तव्य

श्री ऋषिमंडल मंत्र, पूजा व स्तोत्र इस ग्रंथमे सरल अर्थके साथ दिये गये हैं। यह आचार्य गुणनंदि कृत है। गुणनंदिसूरि मंत्रशास्त्रज्ञ थे इसका उल्लेख अन्य मंत्रशास्त्रोंसे भी विदित होता है। किसी किसीका कहना है कि ऋषिमंडल स्तोत्र की रचना गौतम स्वामीके द्वारा हुई है, और ग्रंथकारनें उसे संग्रहकर थोडा परिवर्धन भी किया होगा। नियमित रूपसे यह स्तोत्रपाठ करनेसे अनेक प्रकारके फल प्राप्त होते हैं। केवल ऐहिक ही नहीं पारमार्थिक फल प्राप्त भी होते हैं। साक्षात् अर्हंतदर्शन इस स्तोत्रपाठका फल ग्रंथकारने बताया है।

मंत्रशास्त्रका महत्व

मंत्रशास्त्रका महत्व बहुत है। उसके यथायोग्य विधिपूर्वक साधनसे अभीप्सित फलकी प्राप्ति होती है। विधिविरहित साधनसे अहितकी भी संभावना है। अतः तज्ञ गुरुमुखसे योग्य विधिको जानकर ही इसके साधनके लिये प्रयत्न करना चाहिये। अन्यथा स्तोत्र पाठादिसे ही संतोष कर-लेना चाहिये। इस पुस्तकमे प्रकृत-कल्पकी पूजा, स्तोत्र उद्यापनके लिये आवश्यक विधान एवं अंतमें मंत्रसाधनका विधान भी दिया गया है, जो ऋषिमंडल विधान करने वालोंके लिए पर्याप्त है। यंत्र बनानेकी विधि भी इसमें दी गई है, परंतु आजकल बनानेवाले अक्षरशः उसपर ध्यान नही देते। प्रारंभमें स्वस्ति विधान, सहस्रनाम, पंचपरमेष्ठी पूजन व नवदेवतार्चन करनेके बाद इस विधानको करना चाहिये।

विधान करनेमें जितने अंशमे विशुद्धि होगी उतने अंशमें फलकी प्राप्ति होगी। अशा है कि श्रद्धालु भक्तोंको इसका यथेष्ट उपयोग होगा।

विनीत

कल्याण भवन)
सोलापूर २)

वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
(विद्यावाचस्पति)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीगुणनन्दिमुनीन्द्रविरचित

ऋषिमण्डल यंत्रपूजा

मंगलाचरण व प्रतिज्ञा

प्रणम्य श्री जिनाधीशं लब्धेः सामस्त्यसंयुतम्
ऋषिमंडलयंत्रस्य वक्ष्ये पूजादिमल्पशः । १ ।

यजमान लक्षण

विनीतो बुद्धिमान् प्रीतो न्यायोपात्तधनो महान्
शीलादिगुणसंपन्नो यष्टा सोऽत्र प्रशस्यते । २ ।

समस्त ऋद्धि सिद्धिसे संयुत जिनेंद्र भगवंतको नमस्कार कर ऋषि मंडल–यंत्रकी पूजाका विधान यथामति कहूंगा। इस प्रकार आचार्य मंगलाचरणपूर्वक प्रतिज्ञा करते हैं । १ ।

इस यंत्र पूजाको करनेवाला यजमान विनयशील हो, बुद्धिमान् हो, संतुष्ट हो, न्यायसे द्रव्यार्जन करनेवाला हो, सदाचार शीलादि गुणोंसे युक्त हो, वही यजमान प्रशंसाके योग्य है । २ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

याजक लक्षण

देशकालादि भावज्ञो निर्ममः शुद्धिमान् वरः
सद्वाण्यादिगुणोपेतो याजकः सोत्र शस्यते । ३ ।

आचार्य लक्षण

दर्शनज्ञानचारित्रसंयुतो ममतातिगः
प्राज्ञः प्रश्नसहश्चात्र गुरुः स्यात् क्षांतिनिष्ठितः । ४ ।

मंडपलक्षण

निर्मलं पृथुलं घंटातारिकातोरणान्वितं
प्रलंबत्पुष्पमालाढ्यं चतुर्धकुंभसंयुतम् । ५ ।
भेरीपटहकंसालतालमर्दलनिःस्वनैः ।
आकुलं स्त्रैणगीताद्यैर्मंडपं कारयेद्बुधः । ६ ।

पूजा करनेवाला द्रव्य क्षेत्र काल भावको जाननेवाला हो, लोभरहित हो, अंतरंग बहिरंग शुद्धिसे संयुक्त हो, श्रेष्ठ हो, एवं मधुर भाषण आदि गुणोंसे युक्त हो वही याजक प्रशंसनीय होता है । ३ ।

इस अनुष्ठानमें योग देनेवाला आचार्य सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्रसे संयुक्त हो, ममत्व बुद्धिसे रहित हो, बुद्धिमान् हो, दूसरोंके द्वारा किये गये प्रश्नोंको सहन करनेवाला हो, अर्थात् दूसरोंके प्रश्नसे मनमें कषाय उत्पन्न न हो, क्षमाशील हो वही गुरु आचार्य होने योग्य है । ४ ।

पूजाके लिए बनाया गया मंडप निर्मल हो, विस्तृत हो, घंटा, घटिका और तोरणादिसे सुशोभित हो, फूलकी मालावोंकी सजावटसे युक्त हो और ४ कोनोमें चार मंगल कलश हों, भेरी, ढोल, मंजीरा, मृदंग आदिके शब्दोंसे एवं स्त्रियोंके मंगल गीतोंसे गुंजायमान हो, ऐसा मंडप पूजाके लिए होना चाहिये ।५—६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामग्रीलक्षण

स्वजात्योत्कर्षणी पूता नेत्रमानसहारिणी ।
सामग्री शस्यते सद्भिर्निखिलानंदकारिणी । ७ ।

यंत्रोद्धारविधि

कांचनीयेऽथवा रौप्पे कांस्ये वा भाजने वरे ।
मध्ये लेख्यः सकारांतो द्विगुणो यांतसेवितः । ८ ।
तुर्यस्वरमनोहारी बिंदुराजार्धमस्तकः ।
जिनेशास्तत्प्रभा लेख्या यथास्थानं तदंतरे । ९ ।

पूजाकी सामग्री बढिया, पवित्र, नेत्र व मनको अपहरण करनेवाली और सबको आनंद देनेवाली होनी चाहिये । वही सज्जनोंके द्वारा प्रशंसनोय सामग्री कहलाती है । ७ ।

अब यंत्र बनानेकी विधि कहते हैं । यंत्र सोना, चांदी, अथवा कांसेकी गोल थालीके आकारमें बनवाना चाहिये । उसके बीचो बीचके वलयमें सकारके अंतका हकार लिखें वह हकार यकारके अंत अक्षर अर्थात् रकारसे युक्त हो, और उसमें चौथा स्वर ईकारको मिलावे । और उसके मस्तकपर अर्धचंद्रके आकारमें बिंदु अर्थात् अनुस्वार रख देवे, ऐसा करनेपर 'ह्रीं' यह बीजाक्षर बनेगा । उस ह्रीं वर्णके बीचमें यथास्थान चोवीस तीर्थंकरोंके नाम लिखने चाहिये । ८-९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंद्रप्रभपुष्पदंतौ मुनिसुव्रतनेमिकौ ।
सुपार्श्वपार्श्वौ पद्माभ–वासुपूज्यौ तथाक्रमात् ।१०।
कलायां तदुपरिष्टादीकारे मूर्घ्नि च स्फुटं,
लेख्याः शेषा जिना गर्भे नमो युक्ताः सुपीतभाः ।११।
ततश्च वलयः कार्यस्तद्बाह्ये कोष्टकाष्टकं,
तत्रेति लेख्यं विबुधैश्चारुलक्षणलक्षितैः । १२ ।

ह्रीं कारकी अर्धचंद्रमाकी कलामें ‘ चंद्रप्रभ पुष्पदंताभ्यां नमः यह लिखें। उस कलाके ऊपर विंदुस्थानमें ‘ मुनिसुव्रत नेमिभ्यां नमः ’ लिखें। उपर्युक्त वर्णके ईकारमें “ सुपार्श्व-पार्श्वाभ्यां नमः ” यह लिखें । उपर्युक्त ह्रीं के मस्तकमें ‘ पद्म-प्रभवासुपूज्याभ्यां नमः ’ ऐसा लिखें । बीचके भागमें बचे हुए तीर्थंकर अर्थात् ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिशीतलश्रेयो विमलानंतधर्मशांतिकुंथुअरमल्लिनमिवर्धमानेभ्यो नमः ’ यह लिखें । बीचका वलय पीतवर्णका बनाना चाहिये ।१०–११।

उस ह्रीं वर्णके बाहर आठ कोठेवाले बलयका निर्माण करें, जिसमें बुद्धिमान् पुरुष क्रमशः इन अक्षरोंको लिखें ।
(१)अआ इ ई उ ऊ ऋॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह्मलवर्य्यूं
(२)क ख ग घ ङ, भमलवर्य्यूं (३)च छ ज झ ञ ममलवर्य्यूं
(४)ट ठ ड ढ ण, रमलवर्य्यूं (५) त थ द ध न, घमलवर्य्यूं
(६)प फ ब भ म, झमलवर्य्यूं (७) य र ल व समलवर्य्यूं
(८) श ष स ह, खमलवर्य्यूं इस प्रकार लिखें । १२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ततश्च वलयः कार्यो लेख्यास्तत्राष्टकोष्टकाः।
तत्रेति लेख्यं यिबुधैश्चातुर्यान्वितविग्रहैः । १३ ।

ततश्च वलयः कार्यस्तत्र षोडशकोष्टकाः ।
लेख्यास्तत्रेतिलेख्यं च विद्वद्भिश्चतुरैर्नरैः । १४ ।

उसके बाद पुनः आठ कोठेवाले वलयको खींचें । उसमें बुद्धिमानोंको क्रमशः निम्नप्रकार लिखना चाहिये । ओं न्हीं अर्हद्भ्यो नमः (१) ओं न्हीं सिद्धेभ्यो नमः (२) ओं न्हीं आचार्येभ्यो नमः (३) ओं न्हीं पाठकेभ्यो नमः (४) ओं न्हीं सर्व साधुभ्यो नमः(५)ओं न्हीं तत्वदृष्टिभ्यो नमः(६) ओं न्हीं सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः (७) ओं न्हीं सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः (८) इस तरह लिखें। १३ ।

उसके बाद सोलह कोठेवाला वलय बनावे । उन सोलह कोठोंमें विद्वानोंको क्रमशः निम्नमंत्रोंको लिखना चाहिये । १. ओं न्हीं भावनेंद्राय २. ओं न्हीं व्यंतरेंद्राय ३. ओं न्हीं ज्योतिष्केंद्राय ४. ओं न्हीं कल्पेंद्राय ५. ओं न्हीं श्रुतावधिभ्यो नमः ६. ओं न्हीं देशावधिभ्यो नमः ७. ओं न्हीं परमावधिभ्यो नमः ८. ओं न्हीं सर्वावधिभ्यो नमः ९. ओं न्हीं बुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः १०. ओं न्हीं सर्वौषधिऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः ११. ओं न्हीं अनंतबलर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः १२. ओं न्हीं तपर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः १३. ओं न्हीं रसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः १४. ओं न्हीं विक्रियर्द्धिप्रात्पेभ्यो नमः १५. ओं न्हीं क्षेत्रर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः १६. ओं न्हीं अक्षीण महानसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः यह लिखें।१४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ततश्च वलयः कार्यः चतुर्विंशतिकोष्टकः ।
तत्र लेख्याश्च कर्तव्याश्चतुर्विंशतिदेवताः । १५ ।

ततो मायात्रिकोणे च देयं पत्रं मनोहरं, ।
सर्वविघ्नापहं चैतद्ध्रींकारं प्रांतसंयुजं । १६ ।

उसके बाद चोवीस कोठेवाले वलयका निर्माण करें। उन २४ कोठोंमें क्रमशः चोवीस देवतावोंके नाम लिखें। १. ओं ह्रीं श्रियै २. ओं ह्रीं ह्री देव्यै ३. ओं ह्रीं धृतये ४. ओं ह्रीं लक्ष्म्यै ५. ओं ह्रीं गौर्यै ६. ओं ह्रीं चंडिकायै ७. ओं ह्रीं सरस्वत्यै ८. ओं ह्रीं जयायै ९. ओं ह्रीं अंबिकायै १०. ओं ह्रीं विजयायै ११. ओं ह्रीं क्लिन्नायै १२. ओं ह्रीं अजितायै १३. ओं ह्रीं नित्यायै १४. ओं ह्रीं मदद्रवायै १५. ओं ह्रीं कामांगायै १६. ओं ह्रीं कामबाणायै १७. ओं ह्रीं सानंदायै १८. ओं ह्रीं नंदिमालिन्यै १९. ओं ह्रीं मायायै २०. ओं ह्रीं मायाविन्यै २१. ओं ह्रीं रौद्र्यै २२. ओं ह्रीं कलायै २३. ओं ह्रीं काल्यै २४. ओं ह्रीं कलिप्रियायै । १५ ।

उसके बाद यंत्रके चारों कोनोंमें क्रमशः पत्र अर्थात् ओं क्ष्वीं क्षः और चौथेमें सर्व विघ्नको दूर करनेवाले ह्रीं कारको लिखना चाहिये। अर्थात् ओं ह्रीं क्ष्वीं क्षः यह क्रमशः लिखे ।१६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ यंत्रपूजा

सबसे पहिले—ओं णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं, चत्तारि मंगलं, अरहंतमंगलं, सिद्ध मंगलं साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारिसरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ॥

एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।

इस प्रकार प्रारंभिक मंगल पाठको पढकर आगेके ऋषिमंडलस्तोत्रका पाठ करें नंतर 'ओं ऱ्हीं ऋषिमंडल यंत्रपूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपामि' कह कर यंत्रके ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण करें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ ऋषिमंडलस्तोत्र

आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत्स्थितं ।
अग्निज्वालासमं नादं बिंदुरेखासमन्वितं । १ ।
अग्निज्वालासमाक्रांतं मनोमलविशोधनं ।
देदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलं । २ ।
ओं नमोर्हद्भ्य ईशेभ्य ओं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ओं नमः सर्वसूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ओं नमः ।३।
ओं नमः सर्वसाधुभ्यः तत्वदृष्टिभ्य ओं नमः ।
ओं नमः शुद्धबोधेभ्यश्चारित्रेभ्यो नमो नमः ।४।

आदिके अक्षर अ और अंतके अक्षर ह को लेनेसे बीचके सर्व अक्षर आ जाते हैं । अन्तके वर्णके साथ अग्निज्वाला अर्थात् र कार मिलाना, और उसका मस्तक बिंदु और अर्धचन्द्राकारसे युक्त करना, एवं अर्हं ऐसा बन गया । वह पद अग्निज्वालाके समान तेजःपुंज है, मनके दोषोंको धोनेवाला है, देदीप्यमान है, अतः मैं उस परमपवित्र अर्हं पदको हृदयरूपी कमलपर स्थापन कर निर्मल चित्तसे उसको नमस्कार करता हूं । क्योंकि यह अर्हं पद अर्हंत पदको प्रदान करानेवाला है । १ । २ ।

अर्हंतोंको नमस्कार हो, सिद्धोंको नमस्कार हो, आचार्योंको नमस्कार हो, उपाध्यायोंको नमस्कार हो, सर्व साधुवोंको नमस्कार हो, इसी प्रकार सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्रको नमस्कार हो । ३–४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत–दर्हदाद्यष्टकं शुभं ।
स्थानेष्वष्टसु सन्यस्तं पृथग्बीजसमन्वितं । ५ ।
आद्यं पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकं ।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकां । ६ ।
पंचमस्तु मुखं रक्षेत् षष्ठं रक्षतु घंटिकां ।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं पादांतं चाष्टमं पुनः । ७ ।

इन अरहंतादि आठ पदोंको कल्याण स्वरूप बीजाक्षरोंके साथ आठ दिशावोंमें स्थापन करें । वह सुखकारक हैं । और लक्ष्मीको प्रदान करनेवाले हैं । ५ ।

अरहंत आदि आठ पदोंमें पहिला अरहंतपद शिरकी रक्षा करें । दूसरा सिद्धपद मस्तकको रक्षा करें । तीसरा आचार्यपद दो आंखोंकी रक्षा करें । चौथा उपाध्यायपद नाककी रक्षा करें । पांचवां सर्वसाधुपद मुखकी रक्षा करें । छठा सम्यग्दर्शन गलेकी रक्षा करें । सातवां सम्यग्ज्ञान नाभिपर्यंतकी रक्षा करें । और आठवां सम्यक्चारित्रपद नाभिसे नीचे पादतककी रक्षा करें । ६–७ ।

(इस प्रकार आठ श्रेयरूपपदोंसे अपने अष्टांग रक्षा करनेकी भावना करें । एवं आठ परमपदोंमें चित्तकी लीनता करें)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंत्र बनानेका विधान

पूर्वं प्रणवतः सांतः सरेफो द्वित्रिपंचषान् ।
सप्ताष्टदशसूर्यांकान् श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक् ।८।
पूज्यनामाक्षराद्यस्तु पंच दर्शनबोधकं ।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सांतसमलंकृतम् ।९।

ओं ह्रां ह्रि ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआऊसा
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः ।

इति ऋषिमंडलस्तवस्य यंत्रस्य मूलमंत्रः ।

सबसे पहिले प्रणवाक्षर अर्थात् ओं लिखें। तदनंतर सकारके अन्त अक्षर अर्थात् ह कारको रेफसहित लिखें। तदनंतर उसे बिंदुसहित दूसरी आकारकी, तीसरी इकारकी, पांचवी उ कारकी, छठ्ठी ऊ कारकी, सातवी ए कारकी, आठवी ऐ कारकी, दशमी औ कारकी, मात्रासे संयुक्त करें। बारहवीं अः की मात्रा लगावे। इस प्रकार करनेपर ओं ह्रां ह्रि ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः इस तरहका मंत्र बन जावेगा। तदनंतर पूज्य पंचपरमेष्ठियोंके नामके आद्याक्षरकी असि आ उ सा इन अक्षरोंको उसमें सम्मिलित करें। तदनंतर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रोंका उल्लेख करें अर्थात् सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो यह लिखकर नमः लिखनेके पहिले ह्रीं बीजाक्षरको लिखें। इस प्रकार करनेपर ऋषिमंडलका मंत्र " ओं ह्रां ह्रि ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः " बन जायगा। ८-९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आराधकशुभफलदो नवबीजाक्षरयुतस्तुतः सिद्धः
अष्टादशशुद्धाक्षर मंत्रोयं जाप्य एव वरभक्त्या ।१०।

जंबूवृक्षधरो द्वीपः क्षारोदधिसमावृतः ।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ।११।

तन्मध्ये संगतो मेरुः कूटलक्षैरलंकृतः ।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तारतारामंडलमंडितः ।१२।

यह ऋषिमंडलका बीजमंत्र है। इसमें ऋषिमंडलके साधकोंके लिए शुभ बीजाक्षर नौ हैं। और शुद्ध अक्षर अठारह हैं। कुल २७ अक्षरवाला यह महामंत्र है। प्रथम उच्चारणीय ओं प्रणव बीजाक्षर सर्व मंत्रोंके लिए मूल है, वह गिनतीमें नहीं है। १०।

(आराधकको उचित है कि वह अपने मनमें निम्नलिखित प्रकार विचार करें)

इस मध्यम लोकमें जंबूवृक्षको धारण करनेवाला एक जंबूद्वीप है। वह चारों ओरसे क्षारोदधि अर्थात् लवण समुद्रसे वेष्टित है। वह जंबूद्वीप आठ दिशावोंके अधिपति अर्हंत आदि आठ पदोंसे शोभित है। उसके बीचो बीच मेरु नामक पर्वत है। इसे सुमेरु पर्वत भी कहते हैं। वह अगणित कूठोंसे युक्त है। उसके चारों ओर एकके ऊपर एक ऐसे ज्योतिषचक्रका भ्रमण होनेसे अत्यन्त शोभाको प्राप्त हो रहा है। ११-१२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्योपरि सकारांतं बीजमध्यास्य सर्वगं ।
नमामि बिंबमार्हंत्यं ललाटस्थं निरंजनं ।१३।

अर्हत्परमेश्वरका स्वरूप

अक्षयं निर्मलं शांतं बहुलं जाड्यतोज्झितं
निरीहं निरहंकारं सारं सारतरं घनं ।१४।
अनुद्धतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसं मतं
तामसं विरसं बुद्धं तैजसं शर्वरीसमं ।१५।

ऐसे मेरु पर्वतके ऊपर ऱ्हीं बीज़ाक्षर स्थापित है। उसपर घातिया कर्मोंसे रहित अर्हंत भगवान विराजमान हैं। घातिया कर्मोंसे रहित निरंजन अर्हंत भगवान्को ललाटमें स्थापितकर नमस्कारपूर्वक ध्यान करें। १३।

(पहिले मेरु पर्वतकी चोटीपर ऱ्हीं के ऊपर बैठे हुए अर्हंत भगवंतकी कल्पना करें। तदनंतर उक्त अर्हत्परमेष्ठीको लाकर अपने ललाट प्रदेशमें स्थापन करे एवं उन्हे नमस्कार कर ध्यान करें)

वह अर्हंत परमेश्वर अक्षय अर्थात् जन्म जरा मरणसे रहित है, कर्ममलसे रहित होनेसे निर्मल है। कषायविरहित होनेसे शांत है। विशाल है, अज्ञानसे रहित है। इच्छारहित है। अहंकारसे दूर है, श्रेष्ठ है, श्रेष्ठतर है, महत्वपूर्ण है, उद्दंडतासे दूर है, शुभ है, निर्मल है, सात्विक है, राजस है। आठ कर्मोंके नाशके लिए क्रूरता होनेसे तामस है। श्रृंगार आदि रसोंसे रहित होनेसे विरस है, ज्ञानी होनेसे बुद्ध है। तेजःपुंज है। चांदनीके समान आल्हाददायक है। १४-१५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साकारं च निराकारं सरसं विरसं परं
परापरं परातीतं परं परपरापरं ।१६।

सकलं निष्कलं तुष्टं निर्भृतं भ्रांतिवर्जितं ।
निरंजनं निराकांक्षं निर्लेपं वीतसंशयं ।१७।

ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धमभंगुरं ।
ज्योतीरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकं ।१८।

शरीरसहित होनेसे साकार है । सिद्ध अवस्थामें शरीर-रहित होनेसे निराकार है । आत्मानंदरससे युक्त है, अतः सरस है, रसनेंद्रियविषयक रससे रहित होनेसे विरस है, श्रेष्ठ है, श्रेष्ठतर है, श्रेष्ठतम है । शरीरसहित है, शरीरमोहसे रहित है, परमानंदमय है, भ्रमणरहित है, भ्रमवर्जित है, कर्मरूप अंजनसे रहित है, आकांक्षासे दूर है । कर्मलेपसे रहित है, सर्वज्ञ होनेसे संशयादिसे दूर है, आत्मानंदमें मग्न होनेसे ब्रह्मस्वरूप है, ईश्वर है, बुद्ध है, सर्व दोषोंसे रहित होनेसे शुद्ध है, सिद्ध है, स्थिर है, ज्योतिःस्वरूप है, सर्व देवोंके लिए पूज्य होनेसे महादेव है । अपने ज्ञानज्योतिसे लोकालोकको प्रकाशनेवाला है । इस प्रकार उस अर्हंतपरमेश्वरका ध्यान करें । १६-१७-१८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हदाख्यः सवर्णांतः सरेफो बिंदुमंडितः ।
तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादिमालितः ।१९।
एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ।
पंचवर्णं महावर्णं सपरं च परापरं ।२०।
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्स्तोत्रसंगताः ।२१।
नादश्चंद्रसमाकारो बिंदुर्नीलसमप्रभः ।
कलारुणसमा सांतः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ।२२।
शिरःसंलीन ईकारो विनीलो वर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुसारिसंलीनं तीर्थकृन्मंडलं नमः ।२३।

अर्हंतके वाचक सवर्णांत हकार रेफसहित बिंदुसे संयुक्त होकर चौथे ईकारसे युक्त हो जाय तो ह्रीं बीज बन जाता है। वह ध्यान करने योग्य है। वह बीजाक्षर एक वर्णवाला है अर्थात् सफेद है। श्यामवर्णवाला भी है, लालवर्णवाला है नील-वर्णवाला भी है। पीलावर्णवाला भी है, वह उत्कृष्ट है, श्रेष्ठ-तर है। १९-२०। इस ह्रीं बीजाक्षरमें समस्त वृषभादि चोवीस जिनोत्तम अर्थात् तीर्थंकर अपने २ वर्णोंसे सहित होकर विराजमान हैं। उनका इस स्तोत्रसे संबंध होनेके कारण उसी प्रकार ध्यान करना चाहिये। २१। ह्रीं बीजाक्षरकी नादकला चंद्रमाके आकारकी है अर्थात् अर्धचंद्रके समान हैं, सफेद वर्ण-वाली है। बिंदु नीले वर्णकी है। कला अर्थात् मस्तक, लाल रंगकी है। हकार सब तरफसे सुवर्णके समान पीले रंगका हैं। मस्तकमें संमिलित ईकार विशिष्टनीलवर्णका हैं। उस ह्रीं कारमें अपने २ वर्णके अनुसार तीर्थं कर समूहकी स्थापना की जाये। और उसको नमस्कार करें। २२-२३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकरोंकी स्थापना

चंद्रप्रभपुष्पदंतौ नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिंदुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ ।२४।
पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ ।
शिरईस्थितिसंलीनौ पार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ ।२५।
शेषास्तीर्थंकराः सर्वे रहःस्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हतां ।२६।
गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवंतु जिनोत्तमाः ।२७।

अर्धचंद्राकार नादकलामें चंद्रप्रभ और पुष्पदंत इन दो तीर्थंकरोंकी स्थापना करें । बिंदुके मध्यमें नेमिनाथ और मुनि-सुव्रत जिनेश्वरोंकी स्थापना करें । कलाके स्थानमें पद्मप्रभ और वासुपूज्य तीर्थंकरोंको स्थापित करें । मस्तकमें मिली हुई ईका-रमें सुपार्श्व और पार्श्वनाथ तीर्थंकरकी स्थापना करें । बाकीके १६ तीर्थंकरोंको र कार और ह् कार इन दो वर्णोंके बीच स्थापना करें । इस प्रकार चतुर्विंशति (२४) तीर्थंकर उक्त माया बीजाक्षर ह्रीं के बीजमें स्थित है । वे तीर्थंकर भगवंत सर्व रागद्वेष मोहादि विकारोंसे रहित हैं । समस्त पापकर्मोंसे अर्थात् कर्मोंकी पाप प्रकृतियोंसे रहित हैं । ऐसे निर्दोव तीर्थंकर समस्त लोकमें सदाकाल भव्यात्मावोंको पथप्रदर्शन करें । । २४-२५-२६-२७ ।

(तीर्थंकरोंके द्वारा लोकमें भव्यगण कल्याणपथको प्राप्त करते हैं । उनका कल्याण होता है ।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मरक्षाकी भावना

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसंतु पन्नगाः ।२८।

देवोंके देव जिनेंद्र तीर्थंकरोंके (कोटिसूर्य कोटिचंद्र प्रकाश) समूहकी प्रभासे मेरा शरीरका सर्वांग ढका हुआ है । अतः उसे सर्पकी बाधा न हो ।२८।

इसी प्रकार आगेके श्लोकोंका भी अर्थ समझना चाहिये । अंतर इतना ही है कि अंतिम शब्दके अर्थमें परिवर्तन है ।

देव देवस्य······मां मा हिंसतु नागिनी । २९ । तथौक्त मेरे सर्वांगको सर्पिणीकी बाधा नहो ।

देवदेवस्य······गोनसाः । ३० । गोहसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······वृश्चिकाः । ३१ । बिच्छूसे बाधा न हो ।
देव देवस्य······काकिनी । ३२ । काकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······डाकिनी । ३३ । डाकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······साकिनी । ३४ । साकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······राकिनी । ३५ । राकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······लाकिनी । ३६ । लाकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······शाकिनी । ३७ । शाकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······हाकिनी । ३८ । हाकिनीसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······भैरवाः । ३९ । भैरवोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······राक्षसाः । ४० । राक्षसोंकी पीडा न हो ।
देवदेवस्य······व्यंतराः । ४१ । व्यंतरोंकी बाधा न हो ।
देवदेवस्य······भेकसाः । ४२ । भेकसोंकी पीडा न हो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवदेवस्य······लीनसाः । ४३ । लीनसोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······ते ग्रहाः । ४४ । ग्रहोंकी पीडा न हो ।
देवदेवस्य······तस्कराः । ४५ । चोरोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······वन्हयः । ४६ । अग्निबाधा न हो ।
देवदेवस्य······श्रृङ्गिणः । ४७ । सींगवालोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······दंष्ट्रिणः । ४८ । दाढवालोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······रेलपाः । ४९ । सरकनेवाले जीवोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······पक्षिणः । ५० । पक्षियोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······मुद्‌गलाः । ५१ । दैत्योंसे कष्ट न हो ।
देवदेवस्य······जृंभकाः । ५२ । जृंभकदेवोंसे पीडा न हो ।
देवदेवस्य······तोयदाः । ५३ । जलस्थानोंसे पीडा न हो ।
देवदेवस्य······सिंहकाः । ५४ । सिंहोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······शूकराः । ५५ । सुअरोंसे पीडा न हो ।
देवदेवस्य······चित्रकाः । ५६ । चीतोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······हस्तिनः । ५७ । हाथियोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······भूमिपाः । ५८ । राजावोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······शत्रवः । ५९ । शत्रुवोंसे कष्ट न हो ।
देवदेवस्य······ग्रामीणाः । ६० । ग्रामवालोंसे बाधा न हो ।
देवदेवस्य······दुर्जनाः । ६१ । दुर्जनोंसे कष्ट न हो ।
देवदेवस्य······व्याधयः । ६२ । रोगोंकी पीडा न हो ।
देवदेवस्य······सर्वतः । ६३ । सबसे कोई बाधा न हो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः ।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हन् सर्वनिधीश्वरः । ६४ ।

पातालवासिनो देवा देवा भूपीठवासिनः ।
स्वः स्वर्गवासिनो देवाः सर्वे रक्षंतु मामितः । ६५ ।

येऽवधिलब्धयो ये तु परमावधिलब्धयः ।
ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षंतु सर्वतः । ६६ ।

श्रीगौतम गणधरकी दिव्य ज्योति इस लोकमें सर्वत्र व्याप्त है, उन्हीके प्रसादसे आज श्रुतका विस्तार हुआ है। उनसे भी अधिक प्रभावक ज्योतिको प्राप्त करनेवाले और सर्व निधियोंके अधिपति भगवान् अर्हंत हैं। ६४।

पातालमें रहनेवाले भवनवासी देव, व्यंतर, मध्यम लोकमें रहनेवाले ज्योतिष्क देव, कल्पोमें अर्थात् स्वर्गोंमें रहनेवाले कल्पवासी देव सभी मेरी रक्षा करें। ६५।

जो अवधिज्ञानकी ऋद्धिसे संपन्न हैं, जो परमावधि ज्ञानकी सिद्धिसे युक्त हैं, वे सर्व मुनीश्वर हमारी रक्षा करें। ६६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(भवनव्यंतरज्योतिष्कल्पेंद्रेभ्यो नमो नमः ।
ये श्रुतावधयो देशावधयो योगिनामकाः । ६७ ।
परमावधयस्सर्वावधयो ये दिगंबराः ।
बुद्धिऋद्धियुतास्सर्वौषधिऋद्धिश्रिताश्च ये । ६८ ।
अनंतबलवृद्धचाप्ता ये तप्ततपसोन्नताः ।
रसर्द्धियुंजो विक्रियर्द्धिभाजः क्षेत्रर्धिसंगताः ।६९।
तपःसामर्थ्यसंप्राप्ताक्षीणसद्ममहानसाः ।
एतेभ्यो यतिनाथेभ्यो नूतेभ्योपारतवादिभिः । ७० ।
तीर्णजन्मार्णवेभ्यस्सदृगृद्धिचारित्रयाग्भ्यवै ।
भव्येशीभ्यो भदंतेभ्यो नमोभीष्टपदाप्तये । ७१ ।)

भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिष्क व कल्पवासी देव मेरी रक्षा करें। उनको मेरा बार २ नमस्कार है। श्रुतज्ञानके धारक, अवधिज्ञानके धारक एवं देशावधिसंपन्न यतिश्रेष्ठ, परमावधि और सर्वावधिसंपन्न मुनीश्वर, बुद्धि ऋद्धि, सर्वौषधि ऋद्धि, अनंत बलऋद्धि, तप्तऋद्धि, रसऋद्धि, विक्रियाऋद्धि, क्षेत्रर्द्धि, तपविशेषसे प्राप्त अक्षीण महानसऋद्धि प्राप्त और देवेंद्रादिसे वंद्य, संसार समुद्रसे पार हुए, सम्यक्त्वकी वृद्धि करानेवाले, चारित्रसंपन्न, भव्योंके अधिपति मंगल स्वरूप यतिवरोंको इष्टपद मोक्षकी प्राप्तिके लिए त्रिकरण शुद्धिसे नमस्कार करता हूं। ६७–६८–६९–७०–७१ ।

(ये पांच श्लोक मुद्रित प्रतिमें नहीं हैं। प्राचीन प्रतियोंमें उपलब्ध होते हैं। अतः यहांपर दिये गये हैं। सो आराधक जाने। क्योंकि १६ कोष्ठकोमें इन सबका उल्लेख किया गया है।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री-ह्रीकीर्तिधृतिर्लक्ष्मी गौरीचंडी सरस्वती ।
जया च विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा । ७२ ।
कामांगा कामबाणा च सुनंदा नंदमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया । ७३ ।
एताः सर्वा महादेव्यो वर्तंते या जगत्त्रये ।
मम सर्वाः प्रयच्छंतु कांतिं लक्ष्मीं धृतिं मतिं । ७४ ।
दुर्जना भूतवेतालाः पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वे उपशाम्यंतु देवदेवप्रभावतः । ७५ ।
दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः ऋषीणां मंडलस्तवः ।
भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकृतोऽनघः । ७६ ।

श्री देवी, न्ही देवी, कीर्तिदेवी, धृतिदेवी, लक्ष्मीदेवी, गौरी, चंडी, सरस्वती, जया, विजया, क्लिन्ना, अजिता, नित्या मदद्रवा, कामांगा, कामबाणा, सुनंदा, नंदमालिनी, माया, मायाविनी, रौद्री, कला, काली, कलिप्रिया, ये २४ जिनशासन रक्षिका देवियां और इस लोकमें रहनेवाली ये महादेवियां मुझे कांति, संपत्ति, धैर्य व बुद्धीको प्रदान कर मेरी रक्षा करें । ७२-७३-७४ ।

दुष्टजन, भूत, वेताल, पिशाच, मुद्गर (दैत्यविशेष) आदि क्रूर स्वभावके जीव भगवंतके प्रभावसे उपशम भावको धारण करें । ७५ ।

यह स्तोत्र दिव्य है, सौम्य है, अर्थात् श्रद्धालुवोंको ही देने योग्य है । इतरोंसे गोप्य है, सबको सुलभतासे प्राप्त होने योग्य नही है । सबकी रक्षा करनेमें समर्थ व निर्दोष इस ऋषिमंडलस्तोत्रको भगवान् वीरनाथने प्रतिपादन किया । ७६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणे राजकुले वन्हौ जले दुर्गे गजे हरौ ।
स्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवं । ७७ ।

राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदं ।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं प्राप्नुवंति न संशयः ।७८।

भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतं ।
धनार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः । ७९ ।

युद्ध भूमिमें, राजदरबारमें, अग्निप्रकोपमें, जलप्रवाहमें, कठिनदुर्ग (परकोटा) में, हाथीके उपसर्गमें, सिंहके उपसर्गमें, स्मशानभूमिमें, भयंकर जंगलमें, इस ऋषिमंडल स्तोत्रको स्मरण करनेसे सर्व बाधावोंको दूरकर मानवकी रक्षा करता है ।७७।

इस स्तोत्रको श्रद्धा व नियमसे युक्त होकर जो पाठ करते हैं, वे यदि राज्यसे च्युत हों तो पुनः राज्यको, अधिकारपदसे च्युत हों तो पुनः अधिकारपदको, संपत्तिसे च्युत होनेपर संपत्तिको, निःसंदेह प्राप्त करते हैं । ७८ ।

इग स्तोत्रको श्रद्धापूर्वक त्रिकरण शुद्धिसे स्मरण या पठन करनेवाले यदि पत्नीकी इच्छा करते हों तो पत्नीको, पुत्रकी इच्छा करते हों तो पुत्रको, और संपत्तिकी इच्छा करते हों तो संपत्तिको प्राप्त करते हैं । ७९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
तस्यैवेष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शास्वती । ८० ।

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे ।
धारितः सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशनं । ८१ ।

भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा ।
वातापित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः । ८२ ।

भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठवर्तिनः शास्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः । ८३ ।

जो इस ऋषिमंडल मंत्रको सुवर्ण, चांदी, अथवा कांसेके पत्रेपर लिखकर पूजन करता है, उसके घरमें सर्वदा इच्छित अष्ट महाऐश्वर्यंकी सिद्धि होती है । ८० ।

इस दिव्य मंत्रको भूर्जपत्रपर लिखकर कंठमें, मस्तकमें अथवा भुजमें जो सदा धारण करता है, वह समस्त भयोंसे रहित होता है । ८१ ।

भूत, प्रेत, ग्रह, यक्ष, पिशाच, मुद्गल, आदिके उपद्रव, वात, पित्त, कफ, प्रकोपसे उत्पन्न उपसर्ग इस मंत्रसे दूर होते हैं । इसमें कोई संदेह नहीं है । ८२ ।

अधोलोक, मध्यलोक, ऊर्ध्वलोकमें स्थित अकृत्रिम शास्वत जिनालयोंकी वंदनासे जो फल मिलता है, वह फल इस स्तोत्रके श्रद्धापूर्वक पठनसे मिलता है । ८३ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एतद्गोप्यं महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिनो देये बालहत्या पदे पदे । ८४ ।
आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा यथाबलं +
अष्टसाहस्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे । ८५ ।
शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठंति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवंति च संपदा । ८६ ।
अष्टमासावधिर्यावत् प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
स्तोत्रमेतन्महातेज * अर्हद्देवं स पश्यति । ८७ ।
दृष्टे सत्यार्हते बिंबे भवे सप्तमके ध्रुवं ।
पदं प्राप्नोति विश्रस्तं परमानंदसंपदाम् । ८८ । ⊙

यह स्तोत्र गोप्य है। चाहे जिसे नहीं देना चाहिये। मिथ्यात्वियोंको देनेपर बालहत्यासदृश पाप होता है। ८४।

आचाम्ल आदि तपका आचरण कर यथाशक्ति चोवीस तीर्थंकरोंकी पूजा करते हुए, जो आठ हजार जाप्य इस मंत्रका करता है उसकी इष्टसिद्धि होती है। अर्थात् भूशयन, ब्रम्हचर्य-पूर्वक एकभुक्त व्रतको धारण करें। समस्त दूध आदि वृष्य रसोंका त्याग कर आचाम्ल अर्थात् चावलके मांडको पीकर रहनेको आचाम्ल तप कहते हैं। इस तपको यथाशक्ति धारण करें।

+ जिनावलिं ऐसा भी पाठ है। * तेजस्त्वर्हद्बिंबं स पश्यति यह भी पाठ है। ⊙ परमानंदनंदितं यह भी पाठ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि इस आचाम्ल तपको धारण करनेकी शक्ति न हो तो निर्विकृति नामके तपको धारण कर एक बार शुद्ध भोजन, दूध दही, घी, तेल, मिठाई नमक इन छह रसोमें कोई एक रसका त्यागकर करें। जबतक आठ हजार जाप्यकी पूर्ति न हो तबतक इन दोनोंमेंसे कोई एक तपका आचरण करें। प्रातःकालमें सूर्योदयसे ४ घडी पहिले उठकर शौच स्नानादिसे निवृत्त हो शुचिर्भूत होकर यंत्रका अभिषेक पूजा व जप आदि विधान करें। इस जाप्यकी पूर्ति होनेतक जितेंद्रिय होकर क्रोधादि कषायोंसे दूर रहना चाहिये। जाप्य प्रतिनित्य १०८ अथवा ५०० या १००० जितनी भी शांति निराकुलतासे हो करें। इस प्रकार इस विधिको करनेसे सर्व संपत्तिकी प्राप्ति होती है। प्रतिनित्य प्रातः १०८ जपकर जो इस स्तोत्रका पाठ करते हैं, उनके शरीरमें कोई रोगकी उत्पत्ति नहीं होती और उसकी समस्त इष्टसिद्धि होती हैं। जो सज्जन इस स्तोत्रको प्रतिनित्य प्रातःकाल आठ महिनेतक श्रद्धापूर्वक पठन करता है, उसे अत्यंत तेजःपुंज अर्हत्परमेश्वरका दर्शन होता है। जिसे इस प्रकार अर्हद्बिंबका दर्शन होता हैं, समझना चाहिये कि उसे सिद्धि हो गई है। वह निश्चयसे सातवें भवमें परमानंदमय, शास्वत ऐसे मोक्षको प्राप्त करता है। ८५-८६-८७-८८।

इति ऋषिमंडलस्तोत्रम्

इति पठित्वा यंत्रोपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा

ये जित्वा निजकर्मकर्कशरिपून् कैवल्यमाभेजिरे
दिव्येन ध्वनिनावबोध्य निखिलं चंक्रम्यमाणं जगत् ।
प्राप्ता निर्वृतिमक्षयास्ततितरामंतालिगामादिगां
यक्ष्ये तान् वृषभादिकान् जिनवरान् वीरावसानानहं ।

ओं ह्रीं ऋषभादिवर्धमानांतास्तीर्थंकरपरमदेवा अत्रावतरताव-तरत संवौषट् । आवाहनं। ॐ ह्री ऋषभादिवर्धमानांतास्तीर्थंकर परमदेवा अत्र तिष्ठत २ ठः ठः । स्थापनं ॐ ह्रीं ऋषभादि-वर्धमानांतास्तीर्थंकरपरमदेवा अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् इति संनिधापनं ॥

अष्टक

कर्पूरपंकजपरागसुगंधशीतै —
राकाशशांकविमलैः सलिलैर्जलौघैः ।
सन्मित्रतामुपगतैर्मधुरैर्लघिष्ठै —
र्द्विर्द्वादशप्रमजिनांघ्रियुगं महामि । १ ।

ॐ ह्रीं ऋषभाजित–संभवाभिनंदन–सुमति–पद्मप्रभसुपार्श्वं चंद्रप्रभपुष्पदंतशीतल–श्रेयांस–वासुपूज्यविमलानंत–धर्मशांतिकुंथु अरमल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमि–पार्श्ववर्धमानेभ्यस्तीर्थंकरपरम-देवेभ्यो जलं निर्वपामि इति स्वाहा । जलं ।

काश्मीरपूरघनसारगतोद्भवै—
र्बाह्यांतरंगपरितापहरैः पवित्रैः ।
श्रीचंदनोत्कटरसैःसुरसैःसुभक्त्या द्विर्द्वादशप्रमजिनांघ्रि. २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं ऋषभाजितेत्यादि ..गंधं निर्वपामीति स्वाहा ।

माधुर्यगंधनिवहान्वितदिव्यदेहैः,
कुंदेन्दुसागरकफोज्ज्वलचारुशोभैः ।
शाल्यक्षतैः सुभगपात्रगतैरखंडैर्द्विद्वादशप्रमजिनांघ्रि. । ३ ।

ओं ह्रीं ऋषभादि ..अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंदारकुन्दकमलान्वितपारिजात–
जातीकदंबभसलातिथिसत्प्रसूनैः ।
गंधागतभ्रमरजातरवप्रशस्तैर्द्विद्वादशप्रमजिनांघ्रि० ।४ ।

ॐ ह्रीं ऋषभादि...पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नानारसैर्जिनवरैरिव चारुरूप्यैः,
श्रीकामदेवनिवहैरिव भक्ष्यजातैः ।
सव्यंजनैः स्वरकरैरिव लक्षणौघैर्द्विद्वादशप्रमजिनांघ्रि. ।५।

ॐ ह्रीं ऋषभादि...चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपव्रजैरमलकीलकलापसारै– ।
निर्धूमतामुपगतैः सरलं ज्वलद्भिः ।
पीतद्युतिप्रचयनिर्जितजातरूपैर्द्विद्वादशप्रमजिनांघ्रि. । ६ ।

ॐ ह्रीं ऋषभादि...दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्णागुरुप्रमुखसारसुगंधद्रव्य- ।
प्रोद्भूतमूर्तिभिरलंवरधूपजालैः ।
धूमव्रजप्रमुदितादिनंदनौघैर्द्विद्वादशप्रमजिनांघ्रि. । ७ ।

ॐ ह्रीं ऋषभादि...धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारंगपूगकदलीफलनालिकेर- ।
सन्मातुलिंगकरकप्रमुखैः फलौघैः ।
शाखासुपक्वमधिगम्य विरक्तचित्तै-
र्द्विद्वादशप्रमजिनांघ्रि. । ८ ।

ॐ ह्रीं ऋषभादि...फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलगंधाक्षतैः पुष्पैश्चरुभिर्दीपधूपकैः ।
फलैरर्घं विधायाशु श्रीजिनेभ्यो ददे मुदा ।९ ।

ॐ ह्रीं ऋषभादि... अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येक पूजा

आनंदमेदुरशरीरमनंतबोधं ।
गंभीरनादविहितांबुधरावबोधं
चाये सुनाभिजजिनाद्भुतनामसेघं
धर्मोपदेशजलजीवकृतानुरोधं ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीऋषभतीर्थंकरपरमदेवाय जलादि निर्वपामीति स्वाहा । एवं सर्वत्र गंधादिष्वपि योज्यम् ।

संसारसागरसमुत्तरणैकसेतुं
ध्यानाग्नितापपरितापितमीनकेतुं ।
संपूजयेयमजितं जितरागशत्रुं
निर्वाणमंतगतसीमसुशर्मगंतुं । २ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीअजिततीर्थंकरपरमदेवाय जलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यानानलप्रसरदग्धविधिद्रुकंदं
श्रीसंभवं गतभवं नितराममंदं ।
देवावतंसविलसंतपदारविंदं
सेवेय सप्तवरकेतुमनंतनंदं । ३ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीसंभवतीर्थंकरपरमदेवाय जलं

पीयूषलेहनिवहोपगताभिषेकं
निर्भासिताखिलशरीरगतातिरेकं
संपूजयेयमभिनंदनदेवमेकं
कारुण्यवारिविहिताखिलजीवसेकं । ४ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय अभिनंदनतीर्थंकरपरमदेवाय जलं

कोकांकमानसजिताखिलपुंडरीकं
पादावलग्नसुरसंघविलीनपंकं ।
अन्वर्थनामसहितं सुमतिं निरेकं
वंदेयमानसमनोहरभव्यलोकं । ५ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीसुमतितीर्थंकरपरमदेवाय जलं

शोभाविशेषनिहतोद्धतवादिमानं ।
सत्पुंडरीकवरलक्षणशोभमानं ।
पद्माभमत्र वरदं कृततत्त्वमानं ।
वंदेय चारुमुनिमानसलोकमानं । ६ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरपरमदेवाय जलं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वोत्कभव्यजनजातकृतोद्यभावं
निःशेषकर्मगणनाशवरेण्यभावं ।
सर्वावबोधपरिच्छिन्नसमस्तभावं
सेवे सुपार्श्वमिह नाथमनंगभावं । ७ ।

ॐ -ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीसुपार्श्वतीर्थंकरपरमदेवाय जलं

चंद्रांकमिंदुविमलं जिनमर्चयामि-
कारुण्यवारिधितरंगितमासजंतं ।
चंद्रं विधूतनिखिलाघमहीशसेव्यं ।
साम्यप्ररूढमहिमांचितचारुरूपं । ८ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीचंद्रप्रतीर्थंकरपरमदेवाय ज. ।

श्रीपुष्पदंतजिनमानतपुष्पदंतं
ध्वस्तांतरंगरिपुजातमनंगनष्टं ।
निःशेषसंगरहितं सहितं गुणौघैः
संपूजयामि यतिनाथमनंतबोधं । ९ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीपुष्पदंततीर्थंकरपरमदेवाय जलं

कर्पूरचंदनहिमांशुनिभप्रवाहं
संसारदावशमनं गमनं विमुक्तेः ।
कारुण्यवारिधिमरिंदममूढमुक्ति
श्रीशीतलेशमभिनौमि नतामरेशं । १० ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीशीतलतीर्थंकरपरमदेवाय ज.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्यानुबंधवरभूतिवृतं भदंतं
संतं सतां पतिमनंतगुणं निरंतं
श्रेयांसमत्र निहताखिलकर्मबंधं
संपूजयामि विहिताखिलजीवबोधं । ११ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीश्रेयांसतीर्थंकरपरमदेवाय जलं

निःशेषबोधकलितं कलितं यतींद्रैः
कल्याणसंततिविधानसमर्थपुण्यं ।
दांतं विवृद्धकरुणारसमर्चयामि
श्रीवासुपूज्यमधिगम्य वरप्रसत्ति । १२ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीव.सुपूज्यतीर्थंकरपरमदेवाय ज.

यः पश्यतिस्म नितरां भुवनं समस्तं
संपूजयामि विमलं तमहं शरण्यं
नानाविधं प्रचुरजंतुभृतं गतांतं
स्वाभाविकागतजनुस्सहितं सुभक्त्या । १३ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीविमलतीर्थंकरपरमदेवाय जलं।

अंतातिगं विमलकेवलबोधरूपं
संजातचारुपदमीशमनंतसंज्ञं ।
संपूजयामि च नमामि तथा स्मरामि
देवेन्द्रनागपतिसेवितपादपद्मं । १४ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीअनंततीर्थंकरपरमदेवाय जलं ।

धर्मं जिनेन्द्रमभिनौमि नतामरेंद्रं ।
भव्याब्जखंडहरिदश्वमनेकमेकं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मोपदेशविधिपुष्टसमस्तलोकं
सर्वावबोधनयुतं जितमोहतंद्रं । १५ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीधर्मतीर्थंकरपरमदेवाय जलं ।

शांतिं जिनं स्वपरशांतिविधानदक्षं
संक्षिप्तमन्मथमनोरथमेकलक्ष्यं ।
घातिक्षयस्फुरदनल्पविबोधरूपं
संपूजयामि निजकांतिजितार्यमाणं । १६ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीशांतितीर्थंकरपरमदेवाय जलं।

संभावयामि जिनदेवमनंतवीर्यं
प्रोद्भूतनिर्मलविशालसुकीर्तिमूर्ति ।
कुंथ्वादिजीवसदयं सदयं महंतं
कुंथुं गुणौघममरेशनुतं भदंतं । १७ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीकुंथुतीर्थंकरपरमदेवाय जलादि

षट्खंडभूमिजयलब्धवरिष्ठकीर्ति
संसारभोगगतरागनिरस्तमूर्ति ।
संपूजयेयमरनाथमनल्पबोधं
सद्भव्यचातकघनाघनसंनिभं तं । १८ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीअरतीर्थंकरपरमदेवाय जलं ।

श्रीमल्लिनाथमनिशं वरमर्चयामि
पादद्वयानतनरेन्द्रसुरेंद्रजातं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोधादिभव्यगतवैरिगणप्ररुष्टं
साम्यप्ररूढमनसं सुगिरं निरीशं । १९ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीमल्लितीर्थंकरपरमदेवाय ज.

संमानयामि मुनिसुव्रतनाथमेकं
संसारघातनसमर्थबलप्रशक्तं ।
नानामुनींद्रगणसंस्तुतपादयुग्मं
संप्राप्तचारुनिखिलर्द्धिमनंतसौख्यं । २०

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीमुनिसुव्रततीर्थंकरपरमदेवाय ज

वंदामहे नमिजिनं गतरागदोषं
पादाग्रघृष्टनिजभालसुरासुरौघं
बाह्यांतरंगतपसा चितकर्मदग्धं
सत्सौख्यसागरनिमग्नमनंतदृष्टिं । २१ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीनमितीर्थंकरपरमदेवाय जलं ।

श्रीनेमिनाथमनिशं नितरां महामि
सीरायुधानुगतकृष्णनतांघ्रियुग्मं
निःशेषराजिमतिसंगगतान्तरंगं
कंजांकशोभितमनंगविनष्टभावं । २२ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीनेमितीर्थंकरपरमदेवाय जलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोधोद्धतासुरविशेषकृतोपसर्गं-
रक्षोभ्यमानसमहीशकृतानुरोधं ।
श्रीपार्श्वनाथमिह नष्टसमस्तपंकं-
संपूजयामि वरवांछितदानदक्षं । २३ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरपरमदेवाय

सिद्धार्थभूपतिनिशांतविशिष्टभासि
श्रीकुंडलाख्यपुरि जन्मगृहीतवान्यः ।
संपूजयामि जिननाथमनारतं तं
श्रीवर्धमानमिह वांछितलब्धयेहं । २४ ।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थाय श्रीवर्धमानतीर्थंकरपरमदेवाय ज.

चतुर्विंशतितीर्थेशाः पूर्णार्घं प्रापितास्तरां
शांतिं श्रियं च कल्याणं कुर्वंतु जिनभाजिनां। पूर्णार्घं।

इति चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा

अथाष्टबीजाक्षरपूजा

हभमरघझसखाः पिंडवर्णादिसंयुताः।
अत्रावतरत तिष्ठत भवत संनिहितास्तथा । १ ।

आवाहनादिपुरस्सरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पद्मपत्रेपु
पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

स्ववर्गोपगतं चाये हं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । २ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं शाकिनीग्रहभूतवेताल-पिशाचादिकोच्चाटननाशनादि-समर्थाय अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः संयुताय ह्मलरव्यूं इति बीजवर्णाय जलादि निर्वपामीति स्वाहा ।

स्ववर्गोपगतं चाये भं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ३ ।

ॐ ह्रीं शा ..क ख ग घ ङ संयुताय भमलरव्यूं इति बीजवर्णाय ।

स्ववर्गोपगतं चाये मं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ४ ।

ओं ह्रीं शा...च छ ज झ ञ संयुताय ममलव्र्यूंमिति बीज. ।

स्ववर्गोपगतं चाये रं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ५ ।

ॐ ह्रीं शा... ट ठ ड ढ ण संयुताय रमलव्र्यूं इति बीजवर्णाय ।

स्ववर्गोपगतं चाये घं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ६ ।

ओं ह्रीं शा...त थ द ध न संयुताय घमलव्र्यूं इति बीजवर्णाय ।

स्ववर्गोपगतं चाये झं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ७ ।

ओं ह्रीं शा ...प फ ब भ म संयुताय झमलव्र्यूं इति बीज. ।

स्ववर्गोपगतं चाये सं पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ८ ।

ओं ह्रीं शा...य र ल व संयुताय समलव्र्यूं इति बीज. ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्ववर्गोपगतं चाये ख पिंडाक्षरसंयुतं ।
साग्नि सबिंदु सकलं षष्ठस्वरसमन्वितं । ९ ।

ओं ह्रीं शा...श ष स ह संयुताय खमलव्र्यूं इति बीज. ।

हभ म र घ झ स खाः पिंडवर्णादिसंयुताः ।
पूर्णार्घं प्रापिताः संतु शांतये शर्मणेतरां । १० ।

ओं ह्रीं समस्त पिंडाक्षरेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इष्टप्रार्थना

ह भ म र घ झ स खाः पिंडवर्णादिसंयुताः ।
जलाद्यैः पूजिताः संतु श्रियै वृद्ध्यै समृद्धये ।११।

अथ अर्हदाद्यर्चनं

स्मरामि स्वगुणोपेतान् जिनान् सिद्धान् गुरूंस्त्रिधा ।
तत्त्वदृग्ज्ञानचर्यांश्च द्विभेदान् मोक्षकारणान् । १२ ।

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्राण्यत्रावतरतावरत संवौषट् । आवाहनं । ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्राण्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । स्थापनं । ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-तत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्राण्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधापनं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ पूजा

अर्हत्सिद्धगुरूंस्तत्त्वदृग्ज्ञानचरणानि च ।
तत्पदप्राप्तये सार्धं चाये सद्द्रव्यभावतः । १ ।

ओ ह्रीं मोक्षसुखोपलंभबीजभूतेभ्योऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुतत्त्वदृष्टिज्ञानचारित्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राग्द्राग्रत्नस्य वृष्टि विसृजति धनदो दंभजिच्छासनोक्तं
षण्मासांस्तांस्त्रियुक्तान् सुरयुवतिवरं येषु गर्भं गतेषु ।
स्नात्वा मेरौ विरज्य प्रवरमिति जिनान् केवलज्ञानराज्ये
निर्वाणं प्राप्तवंतो निखिलरिपुगणं ये विजित्वा नुमस्तान्

ओं ह्रीं जगदापद्विनाशनसमर्थेभ्योऽर्हद्भ्यो जलादिनिर्वपा.

साकारं तद्विरक्तं जगदजगदिह ज्ञातृदृष्टप्रकुर्वद्
ध्रौव्यं नाशं जनुर्यद्दुरभिगतिगतं तत्सतत्त्वं हि येषां ।
गौरागौरप्रणष्टं प्रचुरगुणमयं स्वस्थमत्यंतरम्यं
तान्सिद्धान्पूजयामस्त्रिभुवनमहितान् ध्येयतामायुषोद्धाः ।

ओं ह्रीं निष्ठितपरिपूर्णभव्यार्थेभ्यः सिद्धेभ्यो जलादि निर्वपा. ।

निःशेषश्रुतसंगमोद्भवरसात्सूक्तिप्रयुक्तींस्तरां
कुर्वंतो बहुमानसंगतमतीः प्रोद्भूतमिथ्यानतीः ।
नेतुं नाशमनारतं वरगुणान् सूरीन् यजामस्तकान्
ये मिथ्यामतवादिनां नयवतां प्रोत्साहकान् भूरिशः ।

ओं ह्रीं भेदाभेदरत्नत्रयपालनसमर्थेभ्यः सूरिभ्यो जलादि निर्वपा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सद्विद्याभ्यासचित्ता यतिपतिमहिता जाततत्त्वावबोधाः
पंचाचारांश्चरंतः स्वयममृतधियश्चारयंतो गताशाः ।
शिष्यान् ये प्रीणयंतो विनयमुपगतान् सद्गिरा चारुवृत्तान्
शास्त्रार्थं व्यंजयंत्या क्रमनिखिलमुदा पाठकास्तान् यजामः

ओं ह्रीं सद्विद्यानुष्ठानाभ्यासोद्यतेभ्यः पाठकेभ्यो जलं निर्व.

एकत्वस्थितिजातसत्सुखभरव्याप्तिस्फुरच्चेतना—
श्चर्यां सांव्यवहारिकीं बहुविधां ये धारयंतो परां ।
शुद्धस्वात्मगतिप्रवृद्धमहिमांस्तान् पूजयामो भृशं
साधून् साधितमानसेंद्रियगणान् पीयूषसेविस्तुतान् ।

ओं ह्रीं परमसुखप्राप्तिवर्द्धकआपरमोपेक्षानियतेभ्यः सर्वसाधुभ्यो.

तत्त्वार्थरुचिरूपां तां संसारानंत्यनाशिनीं ।
वृत्तादिमूलभूतां तां तत्त्वदृष्टिं भजाम्यहं । ६ ।

ओं ह्रीं संसारांतकरणसमर्थायै तत्वदृष्ट्यै जलादि निर्वपामीति.

तत्त्वार्थाधिगमाधीनं संशयादिविनाशनं ।
चारित्रमित्रताकारि सम्यग्ज्ञानं यजाम्यहं । ७ ।

ओं ह्रीं सत्सुखप्राप्तिमूलभूताय सम्यग्ज्ञानाय जलादि निर्वपा. ।

सर्वसावद्यराहित्यरूपं चारित्रमंजसा ।
यजामि चारु भक्त्याहं संसारक्षयकारकं । ८ ।

ओं ह्रीं स्वर्गादिसंपत्तिनिदानभूताय सम्यक्चारित्राय जलादिनिर्व.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हत्सिद्धगुरुदृष्टिज्ञानचर्याः सुपूजिताः ।
पूर्णार्घं प्रापिताश्चेह संतु क्षेमाय शर्म्मणे । १ ।

ओं न्हीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुतत्वदृष्टिज्ञान
चारित्रेभ्यो पूर्णार्घं
इत्यर्हदाद्यर्च्चनं

अथ भावनेंद्राद्यर्चनं

भावनेशादिकाः शक्राः श्रुतावध्यादियोगिनः
आयात शब्दये युष्मानत्रोपविशत तथा ।।

अथ आव्हानादिपुरस्सरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय
पद्मपत्रेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

भावनेंद्रं यजामीह स्फुरंतं निजसच्छ्रिया ।
निजवाहनमारूढं भजंतं जिननायकं । १ ।

ओं न्हीं भावनेंद्रायेदं अर्घं, पाद्यं जलं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकमक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा ।

व्यंतरेन्द्रं समर्चामि व्यंतरव्यूहसेवितं ।
नमंतं तीर्थनाथं तं विश्वविघ्नोपशांतये । २ ।

ओं न्हीं व्यंतरेंद्राय...…।

ज्योतिष्केंद्रं स्फुरत्कांतिं जिनस्योपास्तितत्परं ।
बलिनानुनये तं च वाहनादिविभूतिगं । ३ ।

ओं न्हीं ज्योतिष्केन्द्राय.....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संभावयामि कल्पेशं सुधांभोनिवहानु गं ।
विभूत्या परया युक्तं जिनयज्ञांगतां गतं । ४ ।
ओं ह्रीं कल्पेन्द्राय...... ।

श्रुतावधिमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यनसंगतमानसान् । ५ ।
ओं ह्रौ श्रुतावधिभ्यो नमः...।

देशावधिमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । ६ ।
ओं ह्रीं देशावधिभ्यो नमः...।

परमावधिमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकन् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । ७ ।
ओं ह्रीं परमावधिभ्यो नमः...।

सर्वावधिमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । ८ ।
ओं ह्रीं सर्वावधिभ्यो नमः...।

बुद्धयर्धिसन्मुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । ९ ।
ओं ह्रीं बुद्धिऋद्धिभ्यो नमः...।

सर्वौषधर्द्धिसंप्राप्तान् द्विधा संयमपालकान् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । १० ।
ओं ह्रीं सर्वौषधर्धिप्राप्तेभ्यो नमः...।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंतबलर्द्धिसंप्राप्तान् द्विधा संयमपालकान्
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । ११।

ओं ह्रीं अनंतबलर्द्धिप्राप्तेभ्यः...।

तप्तर्द्धिगमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान् ।
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । १२ ।

ओं ह्रीं तप्तर्द्धिप्राप्तेभ्यः...।

रसर्द्धिगमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान्
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । १३।

ओं ह्रीं रसर्द्धिप्राप्तेभ्यः...।

विक्रियर्द्धिमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान्
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । १४ ।

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्तेभ्यः...।

क्षेत्रर्द्धिगमुनींश्चाये द्विधा संयमपालकान्
तादृग्विशुधिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । १५ ।

ॐ ह्रीं क्षेत्रर्द्धिप्राप्तेभ्यः...।

अक्षीणमहानसर्द्धीन् द्विधा संयमपालकान्
तादृग्विशुद्धिसंयुक्तान् ध्यानसंगतमानसान् । १६ ।

ओं ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिप्राप्तेभ्यः...।

पूर्णाहुतिः

भावनेशादिकाः शक्राः श्रुतावध्यादियोगिनः
शिवं दिशंतु भक्तेभ्यः प्राप्ताः पूर्णाहुतिं परां ।१७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इष्टप्रार्थना

भावनेशादिकाः शक्राः श्रुतावध्यादियोगिनः ।
शांति पुष्टिं च कुर्वंतु श्रियं मानववासिनीं ।१८ ।

इति भावनेन्द्रार्चनं

अथ श्र्यादिदेवतार्चनं

श्र्याद्याः संशब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोपविशतैता वो यजे प्रत्येकमादरात् ।

आव्हानादिपुरस्सरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पद्मपत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

अथ पूजा

जिनेन्द्रभक्तिसंसक्तां श्रीदेवीं संयजाम्यहं ।
परिच्छदयुतां कांतां जलगंधाक्षतादिभिः । १ ।

ओं ह्रीं श्रीदेवि अत्र आगच्छ इदं अर्घं पाद्यं जलं गंधं, पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकमक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा ।

त्रैलोक्यनायकं धीरं, संसारार्णवतारकं ।
जिनं भजंतीं सद्भक्त्या ह्रीं देवीं पूजयाम्यहं ।२।

ओं ह्रीं ह्रीदेवि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तसुखसम्पन्नं भवातीतं निरंजनं ।
दधतीं हृदि तीर्थेशं चायेहं धृतिदेवतां । ३ ।

ओं ह्रीं धृतिदेवि०

अनंतदर्शनज्ञानसुखवीर्यगुणाकरं ।
लक्ष्मीदेवीं समर्चामि सेवमानां जिनं तरां । ४ ।

ओं ह्रीं लक्ष्मीदेवि०

सुरासुरनराधीशसेवितं जिनसत्तमं ।
सज्ज्ञानदायकं चाये गौरीं मनसि कुर्वतीं । ५ ।

ओं ह्रीं गौरीदेवि०

सत्कांतिविसरव्याप्तशरीराकारमंजसा ।
सेवते जिननाथं या पूजयामीह चंडिकां । ६ ।

ओं ह्रीं चंडिकादेवि०

कर्मशत्रवविध्वस्तं, सुंदराकारशोभितं ।
सरस्वतीं नमंतीं तां जिनेन्द्रं तुष्टिमानये । ७ ।

ओं ह्रीं सरस्वति देवि०

निर्विकारं निराकारं निराकांक्षादिसंयुतं ।
स्वभावमानयंतीं तां समर्चामि जिनं जयां । ८ ।

ओं ह्रीं जया देवि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तामंबिकामहं चाये या जिनं सेवतेतरां ।
दिव्यध्वनिसमायुक्तं ज्ञानं व्याप्तजगत्त्रयं । ९ ।

ओं ह्रीं अंबिका देवि. ।

निःशेषघात्यरातीनां नाशं कृत्वा जिनो हि सः ।
तत्त्वं शास्ति च यः सेव्यो यस्यास्तां विजयां यजे । १०

ओं ह्रीं विजया देवि. ।

जगत्संबोध्य यः प्राप्तो निर्वृतिं जिनराड् महान् ।
तं सेवमानां क्लिन्नाख्यां प्रापयामि मुदं तरां । ११ ।

ओं ह्रीं क्लिन्ना देवि. ।

या तनोति नतिं नित्यं भक्तिं प्रव्यक्तमानसा ।
जिनदेवेऽजितां तां हि बलिनोपकरोम्यहं । १२ ।

ओं ह्रीं अजिता देवि. ।

विमलं निर्मलं ज्ञानचक्षुषं लोकपावनं ।
जिनं हृदि नयंतीं तां नित्याव्हां देवतां यजे । १३ ।

ओं ह्रीं नित्या देवि. ।

अंतातीतं जगद्व्यापि ज्ञानं यस्य मदद्रवां ।
संसेवते जिनं या तां देवता मुदमानये । १४ ।

ओं ह्रीं मदद्रवा देवि. ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समं ददर्श लोकं यो बव्हाशाकारमंडितं ।
तं जिनं भजमानां तां कामांगां करवै सुखं । १५ ।

ओं ह्रीं कामांगा देवि. ।

कर्मचक्रं क्षयं नीत्वा यः प्राप परमं पदं ।
स्मरंतीं तं जिनं भक्त्या कामबाणां मुदं नये ।१६।

ॐ ह्रीं कामबाणा देवि.

सानंदां देवतां चाये या तनोति मुदं जिने ।
नित्यानंदभरव्याप्ते निखिलामरसेविते । १७ ।

ओं ह्रीं सानंदा देवि. ।

पूजयामीह तां देवीं नंदिमालिनिकां जिने ।
भक्ति करोति या नित्यं हृष्टा च सपरिच्छदा ।

ओं ह्रीं नंदिमालिनि देवि ।

मायादिदोषनिर्मुक्तं व्याप्ताशेषजगत्त्रयं ।
सेवमानां जिनं मायां धिनोमि बलिना मुदा ।१९।

ओं ह्रीं माया देवि. ।

मायाविनीं भजे देवीं जिननाथं भजत्यलं ।
मायामपास्य दातारं शांतरूपं कले यका । २० ।

ओं ह्रीं मायाविनि देवि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रौद्रभावस्य हंतारं कर्तारं मोक्षकांक्षिणां ।
सुखस्य रौद्रीं भजतीं जिनं चाये मनोहरं । २१ ।

ओं ह्रीं रौद्रि देवि. ।

निष्कलं सकलं भूतमभूतं जिनमुत्तमं ।
निजचित्तं नयंतीं तां कलादेवीं महाम्यहं । २२ ।

ओं ह्रीं कला देवि. ।

स्वस्थमस्वस्थमव्यक्तं व्यक्तं नित्यमनित्यकं ।
उपकुर्यामिहि कालीं भजंतीं जिननायकं । २३ ।

ओं ह्रीं काली देवि. ।

अक्षयिज्ञानपूरेण संभृतं सत्समज्ञकं ।
कलिप्रियां सेवमानां समर्चामि जिनोत्तमं । २४ ।

ओं ह्रीं कलिप्रिया देवि. ।

इत्येताः श्र्यादिका देव्यो जिनसेवापरायणाः ।
अनुगृण्हंतु जैनांश्च पूर्णार्घं प्रापितान्नरान् । २५ ।

(पूर्णार्घं)

इष्टप्रार्थना ।

श्र्यादिकाः सकला देव्यः शांति तन्वंतु पूजिताः ।
जलगंधाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपफलादिकैः । २६ ।

इति श्र्यादिदेवतार्चनं ।

★

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाप्य मंत्र

(इसके बाद ऋषिमंडल यंत्रके ऊपर शुद्ध लवगोंको या जाई जुई आदि फूलोंको चढाते हुए ऋषिमंडल मंत्रका १०८ जाप्य स्थिर आसन व मनसे करें। ऋषिमंडलका मंत्र यह है।)

ओं ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

(इसके बाद निम्नलिखित चतुर्विंशति तीर्थंकरोंकी जयमाला पढें)

श्रीचतुर्विंशतिजयमाला

पणविवि जिणदेवहं सुरकयसेवहं णासिय जम्मजरामरण
सिवसुहकयरायहं गयमयरायहं णियभत्तिए जुत्तिए थुणमि
जय आइणाह कम्मारिवाह, जय अजिय जिणेसरमोहदाह।
जय संभव गयभवरायडंभ जय अहिणंदणजिणपरसबंभ।
जय सुमइ कुमइगयराय देव, जय पउमप्पह सुरविहियसेव।
जय जय सुपास मणहर सुभास, जय चंदप्पह जियचंदहास।
जय पुप्फयंत जिय पुप्फयंत, जय सीयल णिरसियपीयकंत
जय सेयदेव कयभव्वसेव, जय वासुपुज्ज सुरकियणिसेव।
जयविमलजिणेसर विमलणाण,जयजिण अनंतगयपरमठाण
जय धम्म धम्मदेसणसमत्थ, जय संति संतिगयगंथसत्थ।
जय कुंथुंसामि गयकम्मपंक,जय अर अर सामिय समियसंक
जय मल्लिसामि णियसत्तभंग,जय मुणिसुव्वयलवजियअणंग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय णमिजिण णिरसिय सव्वसंग, जय णेमिमुक्करायमइसंग
जय पासदेव फणिबइवरिट्ठु, जय वड्ढमाण गुणगणगरिट्ठु ।

घत्ता—

इय थुणिवि जिणेसर महिपरमेसर णासियकम्मकलंकभरं ।
सुरवइबहुसंसिय भवभयभंसिय उत्तारिज्जइ अग्घुवरं ।

इति जयमाला

निःशेषामरशेखरार्चितपदद्वंदोल्लसत्सन्नख—
व्रातप्रोद्गतकांतिसंहतिहतप्रव्यक्तभक्त्या स्खलत् ।
गीर्वाणेशमहोत्तमांगमुकुटप्रस्फूर्त्तिमद्रत्नभा—
ऋद्धिं वृद्धिमनारतं जिनवराः कुर्वंतु वः सर्वदा ।

अशेषकर्मारिविनाशजातप्रस्पष्टदृग्ज्ञप्तिसुखस्वरूपाः ।
शांतिं धृतिं शर्मशिवं च सिद्धास्तन्वंतु वो वांछितदानदक्षाः ।

ये चारयंति च चरंति मलव्यतीतं
पंचागमाचरणमात्रविनेयवर्गान् ।
ते संतु चारुगिर आनतदेववर्गाः
सौख्याय चारुमतयो गुरवस्त्रिधापि ।

भावनेशादिकाः शक्रा दिव्या हि श्च्यादिका वराः ।
अन्येपि च सुपर्वाणः विघ्नघाताय संतु वः ।

यावच्चंद्रोर्यमा च प्रतपति भुवने गांगमर्णः सुमेरु—
र्यावत्स्वर्गाः समुद्राः सुरविसरभृताः सद्विमानाः कुलागाः ।
यावन्नक्षत्रमार्गो जिनपतिभवनान्यस्तकर्मारिचक्राः ।
सिद्धास्त्वं पुत्रपौत्रैः सुखमनुभव वै संयुतो नंद जीव ।

इत्याशीर्वादः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार जयमालाको बहुत भक्ति व आदरके साथ कहते हुए सुवर्ण आदि पात्रमें अर्घ्य लेकर मंडलकी तीन प्रदक्षिणा देवें एवं महार्घ्य चढाकर सब मिल भगवान्‌को प्रणाम करें।

पूजा समाप्त होनेके बाद भी रात शेष रहे तो तीर्थंकर पुराण आदि पुण्यपुरुषोंका चरित्र पठन कर रात्रि जागरणसे व्यतीत करें। प्रात: अभिषेक करें। नंतर 'शांति जिनं–शशि-निर्मल वक्त्रं' आदि शांति पाठ पढकर शांतिविधान करें।

नंतर निश्शेषामर आदि आशीर्वाद श्लोकोंको पढकर पूजा करानेवाले यजमान उसकी धर्मपत्नीके ऊपर भगवंतके चरणोंमें अर्पित पुष्पमालाको प्रक्षेपित करें। तदनंतर–

ओं समाहूता देवा: सर्वे स्वस्थानं गच्छत गच्छत।

इस मंत्रसे विसर्जन करते हुए यंत्रके ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

चतुर्विंशतितीर्थेशास्तथार्हदादयोपि च।
अष्टावपि स्फुरन्त्वत्र परमानंदकारिण:।

इति देवता विसर्जनं

(इस श्लोकको पढकर चतुर्विंशति तीर्थंकर और अर्हंत आदि आठ पदोंका ध्यान एकाग्रताके साथ करें।)

—०—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ शांतिकामना

कर्मारातिचतुष्टयीं क्षयमगात् संजातवान् बोधराट्
वाणी विश्वहितंकरा समभवद्विश्वार्थसंदर्शिनी ।
येषां देवमहीशसंस्तुतपदां भव्याब्जपूष्णां सतां ।
लक्ष्मीं शांतिमनारतं जिनवरास्तन्वंतु ते भावुकं ।

(इस श्लोकको पढकर यंत्रके सामने शांतिधारा देकर नंतर निम्नलिखित पुण्याहवाचक मंत्रोंसे सबकी शांतिकामना करते हुए चारोंतरफ पुष्पाक्षतादिसे युक्त जलक्षेपण करे ।)

ओं अर्हद्भयो नमः, सिद्धेभ्यो नमः, सूरिभ्यो नमः, पाठकेभ्यो नमः, सर्वसाधुभ्यो नमः, अतीतानागतवर्त्तमानत्रिकालगोचरानंतद्रव्यगुण–पर्यायात्मकवस्तु-–परिच्छेदक सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राद्यनेकगुणगणाधारपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः । पुण्याह २ प्रियंतां २ । ऋषभादि वर्धमानपर्यंत तीर्थंकरपरमदेवा पुण्याहं २ प्रियंतां २ तत्समयपालिन्यः गोमखादियक्षेश्वराः चक्रश्वरी प्रभृति चतुर्विंशतियक्ष्यः पुण्याहं २ प्रियंतां २, आदित्य, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, प्रभृत्यष्टाशीतिग्रहाः पुण्याहं २ प्रियंतां २। वासुकि शंखपाल कर्कोटक पद्म कुलिकानंत तक्षकमहापद्म जयविजय नाग यक्ष गंधर्व ब्रम्हराक्षस भूत व्यंतर-प्रभृति भूताश्च सर्वेप्येते जिनशासनवत्सलाः पुण्याहं २ प्रियंताम् २ । ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका यष्ट्रयाजक राज मंत्रि पुरोहित सामंतारक्षकप्रभृतिसमस्तलोकसमूहस्य शांति वृद्धि पुष्टि तुष्टि क्षेम कल्याण स्वायुरारोग्यप्रदा भवंतु, सर्वसौख्यप्रदाश्च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संतु। देशे राष्ट्रे पुरेषु च सर्वदैव चौरारिमारीति दुर्भिक्षविग्रह विघ्नौघ दुष्टग्रह भूत शाकिनीप्रभृत्यशेषाण्यनिष्टानि प्रलयं प्रयांतु। राजा विजयी भवतु। प्रजा सौख्यं भजतु। राजप्रभृति समस्तलोकाः सततं जिनधर्मवत्सलाः पूजा दान व्रत शील महा-महोत्सवप्रभृतिषूद्यता भवंतु, चिरकालं नंदंतु। यत्र स्थिता भव्यप्राणिनः संसारसागरं लीलयैवोत्तीर्यानुपमसिद्धिसौख्यमनंत-कालमनुभवंतु।

इति प्रार्थना.

इति ऋषिमंडल पूजा विधानं

---o---

संघपूजा

ततो ह्यागतसंघं च शक्रं निजपरिच्छदं।
गुर्वादिकं तथान्यांश्च तर्पयेच्च यथायथं॥ १॥
करोति कारयत्येव कुर्वंतमनुमोदते।
इमां पूजां हि यो धन्यो गुणनंदी स जायते॥ २॥

अर्थः—इसके बाद पूजाविधानमें आगत सर्वसंघका यज-मान आदर करें। चतुस्संघको आहारदान, समदान, उपकरण दान आदिसे सन्मान करें। जो इस ऋषिमंडल यंत्रकी पूजा स्वयं करता है, कराता है या करनेवालोंको अनुमोदना देता है वह स्वयं सद्गुणोंसे मंडित होकर गुणनंदी अर्थात् गुणोंमें आनंद करनेवाला बन जाता है। अर्थात् वह क्रमशः मोक्ष साम्राज्यको पाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकर्ता-प्रशस्ति

गुणनंदिमुनींद्रेण रचिता भक्तिभावतः ।
शतत्रयाधिकाशीतिश्लोकानां ग्रंथसंख्यया ॥ ३ ॥

अर्थः—यह ऋषिमंडल यंत्र पूजा गुणनंदि मुनीश्वरने एकसौ तिरासी श्लोकोंसे बहुत भक्ति भावसे रची है ॥ ३ ॥

श्रीमच्चारुचरित्रपात्रगुणवच्छ्रीज्ञानभूषांघ्रिभा-
गर्हच्छासनभक्तिनिर्मलरुचिः पद्माजनुर्वा शुचिः ।
वीरांतःकरणश्च चारुचरणे बुद्धिप्रवीणोऽरचत्
पूजां श्रीऋषिमंडलस्य महतीं नंदी गुणादिर्मुनिः ॥ ४ ॥

इति ऋषिमंडलपूजा ।

अर्थः—निर्मल चारित्रके धारक गुणवान् श्री ज्ञानभूषण यतिके चरणोंका सेवक (शिष्य) जिनेंद्र शासनके परमभक्त निर्मल सम्यक्त्वके धारक भगवान् महावीरको अंतकरणमें रखकर एवं उनके चरणोंमें बैठकर बुद्धिमान् गुणनंदी मुनिने इस श्री ऋषिमंडल यंत्रकी महती पूजा रची है ।

इति ऋषिमंडल पूजा विधानं समाप्तम्

—oo—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ दशदिक्पालकपूजा ।

दिगीशाः संशब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोविशतैतान् वो यजे प्रत्येकमादरात् ॥ १ ॥

आवाहनादिपुरस्सरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय कमलेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

विपुलपविसमस्त्रस्त्रैदशानीकशुंभत् ।
प्रकटघटितटंकाघंटिकैरावणस्थं ॥
जिनयजनविधानप्राप्तसंमानदानं ।
सुरपतिमिह चाये प्राक्शचीपूज्यपादम् ॥ २ ॥

ओं आं क्रों ह्रीं इन्द्र आगच्छ २ इंद्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं वलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति.

स्वाहान्वीतं सुकुंडी दधतमिह करे वामके पुण्यसूत्र-
मन्यस्मिन् ब्रम्हसूत्रं पृथुमधुपनिभछागराजाधिरूढं ।
रक्ताक्षं प्राच्यपाच्यां श्रुतसुभगमुखं देवदेवात्तभक्ति ।
चायेग्नि पापतापप्रबलगदमदारंभदंभप्रशांत्यै ॥ ३ ॥

ओं आं क्रों ह्रीं अग्ने आगच्छ २ अग्नये इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं वलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लुलायवाहं विधुकांडदंडसुंडामरक्रूरवधूप्रलोकं ।
यमं यजे पाद्यमितप्रभावं नृशंसरूपं प्रथितं पृथिव्यां ॥

ओं आं क्रों ह्रीं यम आगच्छ २ यमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

ऋक्षारूढं तिमिरकरुचं क्रूररक्षोभियुक्तं ।
नैऋत्यं तं द्रुघनघनकोच्छिन्नरौद्रारिवर्गं ॥
चेकीयेहं निजवरवधूलोलनेत्रं लवित्रं ।
विघ्नौघानां जिनवरमहे नैऋते योगभाजं ॥ ५ ॥

ओं आं क्रों ह्रीं नैऋत्य आगच्छ २ नैऋत्याय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

सलिलकमलखेलत्प्रोल्लसद्दंतदीप्तिः ।
सुकरिमकररूढं पाशपाणिं वराक्षं ॥
अपरदिशि यजेहं मौक्तिकाहारधारं ।
वरुणमिह वधूभिर्भासुरं भासितांगं ॥ ६ ॥

ओं आं क्रों ह्रीं वरुण आगच्छ २ वरुणाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

सारंग्ययुग्ममिह वृक्षमहास्त्रपाणिं ।
वातं पृणामि व्यचलल्लघुलोलदेहं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अस्तोत्तरांतरदिशि प्रथितोरुचंडं ।
नानार्थसार्थकरणोद्धरणैकदक्षं ।। ७ ।।

ओं आं क्रों ह्रीं पवन आगच्छ २ पवनाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

मरालवृन्दोद्धृतपुष्पकाख्यविमानरूढं धनदं पृणामि ।
उदःस्थितं काम्यधनादिदेवीस्तुतं सुमुक्ताफलदामरम्यं ।

ओं आं क्रों ह्रीं कुबेर आगच्छ २ कुबेराय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

पूर्वोत्तरेशं वृषभाधिरूढं शूलं कपालं स्वगणं धरंतं ।
भुजंगभूषं सजटार्धचंद्रं शिवं धिनोमि प्रगुणप्रकाशं ।९।

ओं आं क्रों ह्रीं ईशान आगच्छ २ ईशानाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

पद्मावतीप्राणपतिं ससर्पकरं गिरीशप्रणधिं पृणामि ।
कूर्माधिरूढं धरणं फणारुग्भांतं महोद्रेकहरं सशस्त्रं ।१०।

ओं आं क्रों ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ २ धरणेंद्राय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंहासनं कुंतकरंभनुक्तं पुरोहिणीष्टं वरमाल्यभूषं ।
ज्योत्स्नासुवर्णं कुमुदाकरेष्टं महामि सोमं जिनयज्ञ ऊर्ध्वं ।।

ओं आं क्रों ऱ्हीं सोम आगच्छ २ सोमाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति ।

पूर्णाहुतिं पूर्णरथा दिगीश्वराः ।
प्रयांतु चानंदकराः सुसेविताः ।।
द्रष्टुं गतानां शुभशांतिकारिणो ।
जैनोत्सवं सर्वजनोत्तमानाम् ।। ।। पूर्णार्घम् ।।

इति दशदिक्पालक पूजा

अथ क्षेत्रपालार्चनं ।

सर्पद्दर्पसुसर्पभूषणचरभ्राजिष्णुसत्किंकिणी- ।
क्वाणध्वानितनूपुरं स्फुटनटत्सत्सारमेयासनं ।।
क्षेत्रेशं धृतमस्तकोत्तमजिनं दंष्ट्राकरालं भजे ।
भृङ्गाभं हरिदंबरं तिलगुडैरालाढ्य सिंदूरकैः १

ओं ऱ्हीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहन-वधूचिन्हसपरिवार हे क्षेत्रपाल एह्येहि । क्षेत्रपालाय इदं अर्घ्यं पाद्यं इत्यादि ।

इति क्षेत्रपाल पूजा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंत्रसाधनविधान

योगोपदेशदैवतसकलीकरणोपचारजपहोमान् ।
दिक्कालादीन् मंडलमक्षरसंज्ञाश्च विज्ञेया ॥ १ ॥
दिक्कालमुद्रासनपल्लवानां भेदं परिज्ञाय जपेत् स मंत्री ।
नचान्यथा सिध्यति तस्य मंत्रःकुर्वन् सदा तिष्ठतु जाप्यहोमं
साधकाख्यादिमंत्रादिवर्णौ भतारयोरपि ।
तद्राश्योश्च तयोश्चानुकूल्यं योग इति स्मृतः ॥ ३ ॥
मंत्रो गुरूपदिष्टः स्यात् सफलस्तदिह पुस्तके ।
प्रकटं लिखितोपि गुरोरेव ग्राह्यं न च स्वयम् ॥ ४ ॥
वृषवदनमहायक्षस्त्रिमुखो यक्षेश्वरश्च तुंबुरुकुसमौ ।
मातंगयक्षविजयावजितो ब्रह्मा तथेश्वरकुमाराख्यौ ॥५॥
चक्रेश्वरी रोहिणी च प्रज्ञप्तिर्वज्रशृंखला ।
तथा पुरुषदत्ता च मनोवेगा च कालिका ॥ ६ ॥
तीर्थेषु महायक्षाः क्रमाच्चतुर्विंशतिजिनानां ।
स्युश्चतुर्विंशतिर्यक्ष्याः सेवंते जिनशासनं ॥ ७ ॥
आसां प्रसादात् संप्राप्तखेचरत्वादिवैभवाः ।
विद्याधरा विराजंते मर्त्या अपि सुरा इव ॥ ८ ॥
ध्यात्वैवं परया भक्त्या प्रोक्ता विद्याधिदेवताः ।
तत्र विद्यासु कर्तव्याः सकलीकरणादयः ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिसाधयिषुणा विद्यामविघ्नेनेष्टसिद्धये ।
यत्स्वस्य क्रियते रक्षा सा भवेत् सकलीक्रिया ।। १० ।।
शुद्धेनामृतमंत्रेण वेष्टचं तच्छुद्धियंत्रकं ।
न्यस्य शुद्धजले स्नायाद्येनामृतपदं स्मरेत् ।। ११ ।।
एवं स्नानपवित्रांगो धौतवस्त्रपरिग्रहः ।
स्थित्वा संमार्जितैकांतप्रदेशे देशसंयमी ।। १२ ।।
कृतेर्यापथसंशुद्धिः पर्यंकासनसंस्थितः ।
समीपस्थार्चनाद्रव्यः कुर्याद्विधिमिमं पुरा ।। १३ ।।
परमात्मानमात्मानं प्रातिहार्यैरलंकृतं ।
ध्यायेत् स्वपादयुग्भावनम्रमूर्धचराचरम् ।। १४ ।।
इत्थं संकीर्तितामेनां विधाय सकलीक्रियां ।
पंचोपचारविधिना यजेन्मंत्राधिदेवतां ।। १५ ।।
पंचाव्हाननस्थापनसाक्षात्करणार्चनाविसर्गाः स्युः ।
मंत्राधिदेवतानामुपचाराः कीर्तितास्तज्ज्ञैः ।। १६ ।।
आव्हानं पूरकेण स्यात् रेचकेन विसर्जनं ।
शेषकर्माणि योज्यानि कुंभकेन प्रयत्नतः ।। १७ ।।
अथवैषामपि मंत्राणामवचने जपादिषु संख्या ।
शतमष्टोत्तरसंख्या सहस्रमष्टोत्तरं वदंति जिनाः ।।१८।।
सर्वेषामपि मंत्राणां मनसा जिव्हया शनैः ।
उच्चैरपि जपेद्भक्त्या विहितो मन्यते क्रमात् ।। १९ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जपादविकलो मंत्रः स्वशक्ति लभते परां ।
होमार्चनादिभिस्तस्य तृप्ता स्यादधिदेवता ॥ २० ॥
एकस्तावद्वह्निः पुनरपि पवनाहतो न किं कुर्यात् ।
एको मंत्रः पुनरपि जपहोमयुतोस्य किमसाध्यं ॥ २१ ॥
जपकाले नमः शब्दं मंत्रस्यांते प्रयोजयेत् ।
होमकाले पुनः स्वाहा मंत्रस्यायं सदा क्रमः ॥ २२ ॥
होमादिषु संख्या स्यात् दशभागा मूलमंत्रसंख्यायाः ।
अंगादेरपि संख्या मंत्रस्य तथैव बोद्धव्या ॥ २३ ॥
चतुरस्रं त्रिकोणं च वृत्तं चेति त्रिधा विदुः ।
कुंडानि गार्हपत्याद्याः पूज्यंते यत्र पावकाः ॥ २४ ॥
मारणाकृष्टिवश्येषु त्र्यस्रं कुंडं प्रशस्यते ।
विद्वेषोच्चाटयोर्वृत्तमन्येषु चतुरस्रकं ॥ २५ ॥
तेषां हस्तोवगाढे च विस्तारे च प्रमा मता ।
पृथक्पृथक् स्मृतास्तिस्रो मेखलास्त्रिषु मंत्रिभिः ॥ २६ ॥
आरभ्य तासामाद्याया विस्तृता वुच्छ्रितावपि ।
अंगुलानि प्रमा पंच चत्वारि त्रीणि च क्रमात् ॥ २७ ॥
सकलीक्रियाविशुद्धः परिधाय क्षौममक्षतं नूनं ।
क्षौममयमुत्तरीयं बिभ्राणो ब्रह्मसूत्रधरः ॥ २८ ॥
रचयन् पल्यंकासनमुपांततरवर्तमानहोमार्थः ।
होमक्रियां विदध्यादाशासुः कर्मसंसिद्धिम् ॥ २९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पलाशस्य समिन्मुख्या स्यादमुख्या पयस्तरोः ।
विधानमेतत्संग्राह्यं विशेषवचनादृते ॥ ३० ॥
सृक्सृचौ चांदनौ मुख्यौ पैस्थलौ दलसंभवे ।
तदभावे पलाशस्य दलं वा पिप्पलस्य वा ॥ ३१ ॥
यानींधनानि पूतानि शुष्काणि क्षीरभूरुहां ।
भवंति तानि काष्ठानि सर्वस्मिन् होमकर्मणि ॥ ३२ ॥
प्रस्थः क्षीरस्य मानं स्याद् घृतस्य च तथा भवेत् ।
होमद्रव्यविमिश्रस्य मानं प्रस्थद्वयं मतम् ॥ ३३ ॥
वधविद्वेषोच्चाटेष्वष्टौ पुष्टौ मता नव शांतौ ।
आकृष्टिवशीकृत्योर्द्वादश समिधः प्रमांगुलयः ॥ ३४ ॥
अशुभैर्होमं कुर्यात् क्रुद्धमनाः क्षुद्रकर्म सर्वमपि ।
कर्म शुभं विदधीत प्रसन्नचित्तः शुभैर्द्रव्यैः ॥ ३५ ॥
वार्गंधाक्षतपुष्पोघैर्दीपधूपफलैः क्रमात् ।
स्वं स्वं मंत्रं जपेन्मंत्री सप्तार्चिषमथार्चयेत् ॥ ३६ ॥
तस्मिन् प्रथमं त्रिमधुरयुक्तामेकां समिधं स्वहस्तेन ।
मंत्री जुहुयादाज्यैश्चाहुतिमेकां स्तवेन ततः ॥ ३७ ॥
व्यामिश्रितशेषद्रव्याहुतिमेकां ततः स्रुचा कुर्यात् ।
प्रतिसमिधमेवं विधिः समिधस्त्वष्टोत्तरशतं तस्य ॥३८॥
क्षीरं घृतं गुडं चैतत् त्रिमधुराणीति कथ्यते ।
इति होमविधिः प्रोक्तः स कर्तव्यो मनीषिभिः ॥ ३९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अविकलया सामग्र्या येनैकः साधु साधितो मंत्रः ।
तस्याल्पयापि च तया परेपि मंत्राः प्रसिध्यंति ॥ ४० ॥
स्तंभं विद्वेषमाकृष्टिं पुष्टिं शांतिं प्रचालनं ।
वश्यं वधं च तं कुर्यात् पूर्वाद्यभिमुखः क्रमात् ॥ ४१ ॥
वश्यविद्वेषणोच्चाटपूर्वमध्यापराण्हके ।
संध्यार्धरात्रिरात्र्यंते बधशांतिकपौष्टिकम् ॥ ४२ ॥
अंकुशसरोजबोधप्रबालमच्छंखवज्रमुद्राः स्युः ।
आकृष्टिवश्यशांतिकविद्वेषणरोधबधसमये ॥ ४३ ॥
दण्डस्वस्तिकपंकजकुर्कुटकुलिशोद्यभद्रपीठानि ।
आसनविधौ प्रयोज्यान्युक्तेष्वाकर्षणाद्येषु ॥ ४४ ॥
वषट् वश्ये फडुच्चाटे हुं द्वेषे पौष्टिके स्वधा ।
वौषटाकर्षणे स्वाहा शांतौ घेघेऽथ मारणे ॥ ४५ ॥
आकृष्टौ संवश्ये शांतौ द्वेषे च रोधने वधे क्रमशः ।
उदयार्करक्तशशधरधूम्रहरिद्रासिता वर्णाः ॥ ४६ ॥
पीतारुणासितैः पुष्पैः स्तंभनाकृष्टिमारणे ।
शांतिपौष्टिकयाः श्वेतैर्धूम्रवर्णैः प्रचालने ॥ ४७ ॥
लोहितच्छविभिर्वश्ये विद्वेषेंऽजनसन्निभैः ।
जपहोमार्चनान्यत्र तत्र कार्याणि मंत्रवित् ॥ ४८ ॥
कुंभकं स्तंभनाद्येषु रेचकं चालनादिषु ।
पूरकं चांगनांकृष्टिप्रमुखे च प्रयोजयेत् ॥ ४९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्फटिकप्रवालमुक्ताचामीकरपुत्रजीवकृतमणिभिः ।
अष्टोत्तरशतजाप्यं शांत्याद्यर्थं करोतु बुधः ॥ ५० ॥
कुर्याद्वा वामहस्तेन वश्याकर्षणमोहनं ।
दक्षिणेनाखिलं होमं शिष्टाः सर्वा क्रिया अपि ॥ ५१ ॥
अन्योन्यवज्रविद्धं पीतं चतुरस्रवमनिबीजयुतं ।
कोणेषु रांतयुक्तं भूमंडलसंज्ञकं ज्ञेयं ॥ ५२ ॥
नीरजभूषितवदनं कलशाकारं चतुर्वकारयुतं ।
चेतं जलबीजयुतं जलमण्डलमाहुराचार्याः ॥ ५३ ॥
मुखमूलवयोपेतः पद्मपत्रांकितः सितः ।
पववर्णात्तदिक्कोणः कलशस्तोयमण्डलं ॥ ५४ ॥
त्रिस्वस्तिकं त्रिकोणं यांतं कोणेषु वन्हिबीजयुतं
ज्वालायुतमरुणाभं तन्मंडलमाहुराग्नेयं ॥ ५५ ॥
बहुबिंदुवक्ररेखं वृत्ताकारं चतुर्यकारयुतं ।
कृष्णं मारुतबीजं वायव्यं मंडलं प्राहुः ॥ ५६ ॥
चत्वारि मंडलानि च लवरयवर्णैः क्रमेण युक्तानि ।
पृथ्वीसलिलहुताशनमारुतबीजैः समेतानि ॥ ५७ ॥
आग्नेयमंत्रः सौम्यः स्यात् प्रायशोंते नमोन्वितः ।
सौम्यमंत्रस्तु विज्ञेयः फट्कारेणान्वितोंततः ॥ ५८ ॥
शिष्योमंत्रक्रियारंभे स्नातः शुद्धांबरं दधत् ।
निर्जंतुदेशके पूजाजपहोमान् करोत्विति ॥ ५९ ॥

इति मंत्रसाधनविधानम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंत्र साधनविधान

अर्थः—मंत्र सिद्ध करनेवाला साधक मंत्र साधनके पहिले योग, उपदेश, अधिष्ठात्री देवता, सकलीकरण, उपचार, जप, होम, दिशा, काल आदि विषयोंका अवश्य विचार करें तथा मंडल अक्षरसंज्ञा आदिका भी विचार करें ॥ १ ॥

मंत्र साधन करनेवालेको उचित है कि वह दिशा, काल, मुद्रा, आसन, पल्लव आदिका भेद जानकर मंत्रसाधन करें। जाप्य, होम करते समय भी इन बातोंका विचार करना चाहिये। अन्यथा सदा जाप्य होम करते हुए भी मंत्रकी सिद्धि नहीं हो सकती है ॥ २ ॥

योग विचारः—सबसे पहिले साधकके जन्म नामके आद्याक्षर और मंत्रके आद्याक्षरसे नक्षत्र तारा और राशिकी मिलान करें। यदि अनुकूलता आवे तो समझना चाहिये कि मंत्र सिद्ध हो जावेगा। यदि प्रतिकूल आवे तो समझना चाहिये कि उसका श्रम व्यर्थ है। मंत्र सिद्ध नहीं होगा। इसीका नाम योग है ॥ ३ ॥

उपदेशः—मंत्र सदा गुरूके द्वारा उपदिष्ट ही होना चाहिये। यद्यपि इस पुस्तकमें या अन्य पुस्तकोंमें मंत्र लिखे हुए रहते हैं। तथापि साधन करनेके पहिले गुरूपदेशको पाकर ही मंत्र जप करना चाहिये। स्वयं पढकर मंत्रसाधन करना उचित नही है ॥ ४ ॥

देवताः—गोमुख, त्रिमुख, यक्षेश्वर, तुंबुरु, कुसुमवर, मांतंग, विजय, अजित, ब्रम्हा, ईश्वर, कुमार आदि चोवीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकरोंके यक्ष, चक्रेश्वरी रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रश्रृङ्खला, पुरुष दत्ता, मनोवेगा, काली, ज्वालामालिनी, पद्मावती आदि चोवीस तीर्थंकरोंकी यक्षिणी, जिन्हे शासनदेवता भी कहते हैं, ये जिनशासनकी सदा सेवा करते हैं। इनके प्रसन्न होनेसे मनुष्य विद्याधरोंके समान वैभवको प्राप्त करते हैं । वे विद्याधर मनुष्य होनेपर भी देवोंके समान सुखका अनुभव करते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

इस प्रकार एकाग्रचित्तसे भक्तिपूर्वक इन विद्यादेवतावोंका ध्यान करना चाहिये, जिससे मंत्र सिद्ध हो जाय। परंतु उससे पहिले सकलीकरणविधि अवश्य करनी चाहिये ॥ ९ ॥

मंत्र साधन करनेकी इच्छा रखनेवाले साधक अपने कार्यमें निर्विघ्नताकी प्राप्तिके लिए अपनी रक्षाकी जो क्रिया करता है, वह सकलीकरणके नामसे कही जाती है ॥ १० ॥

उसकी विधि इस प्रकार है। पहिले जलमंडलका निर्माण कर जलशुद्ध करे। नंतर अमृत मंत्रका शुद्ध उच्चारण करते हुए अमृत स्नान करे। सुरभिमुद्रासे उस जलको सर्वांगक्षेपण करें। इस प्रकार मंत्र स्नानकर शुद्ध धोती दुपट्टा पहनलेवें। एकांत स्थानमें बैठकर देशसंयम व्रतको धारण करें। ब्रम्हचर्यादि नियमसे पद्मासन या पर्यंकासनमें बैठे। समीपमें ही पूजा सामग्री आदि रखलेवें, एवं अपने हृदयमें यह विचार करें कि अष्ट महाप्रातिहार्योंसे युक्त अर्हंत परमात्माके स्वरूपमें मेरी आत्मा है। और समस्त चराचर प्राणी उस आत्माके चरणोंमें नमस्कार कर रहे हैं। इस प्रकारकी भावना करें। इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकार अपने आत्माका चिंतवन करते हुए सकलीकरण करें और पंचोपचार विधानके द्वारा मंत्रकी अधिदेवताकी पूजा करें ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

वह पंचोपचार पूजन यह है। आव्हान, स्थापन, सन्निधीकरण, अर्चन, और विसर्जन इन पांच प्रकारकी विधियोंसे मंत्राधिदेवतावोंकी पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार तज्ञोंके द्वारा कहा गया है ॥ १६ ॥

आव्हानादि क्रियावोंमें चित्तकी स्थिरताके लिए वायु धारणादि विधिसे उनका प्रयोग करना आवश्यक हैं। इसका नाम प्राणायाम भी है। आव्हान क्रिया पूरकसे और विसर्जन रेचकसे करनी चाहिये। शेष तीन क्रियायें कुंभकसे करनी चाहिये ॥ १७ ॥

मंत्र जपकी संख्या उन उन विधियोमें कही गई है। कहीं अगर नहीं भी कही गई हो तो भी १०८ और १००८ संख्या सामान्यसे जिनेंद्र भगवंतके द्वारा प्रतिपादित है ॥ १८ ॥

सर्व मंत्रोंको मनसे जिव्हासे धीरे धीरे शुद्ध उच्चारण करते हुए जपना चाहिये। वही यथार्थ फलदायक होता है ॥ १९ ॥

संपूर्ण शुद्ध उच्चारित मंत्रके जपसे वह साधक इच्छित शक्तिको प्राप्त करता है। परन्तु होम, शांतिपूजा आदिके द्वारा उस मंत्रकी अधिदेवता अधिक तृप्त होती हैं ॥ २० ॥

एक तो स्वयं अग्नि ज्वलनसामर्थ्यसे युक्त है। यदि उसे हवाका साहचर्य मिल जाय तो वह क्या नहीं कर सकती ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी प्रकार मंत्र स्वयं सर्व शक्तिमान् है, यदि उसे जप होमादिका साहचर्य मिल जाय तो वह क्या नहीं कर सकता है ? उसके लिए कोई कार्य असाध्य नही है ॥ २१ ॥

जपके समय मंत्रके अन्तमें नमः पद लगाना चाहिये। होमके समय मंत्रके अन्तमें स्वाहा पदका प्रयोग करना चाहिये। यह मंत्र प्रयोगका सदा नियम है ॥ २२ ॥

होममें आहुतिकी संख्या मूल मंत्रके जपसे दशांश मानी गई है। यदि मूल मंत्रका जप सवालाख हो गया हो तो आहुति संख्या साडे बारह हजार होनी चाहिये। इसी प्रकार अन्य सभी विधानोमें समझना चाहिये। होमकुंड तीन प्रकारके बनाये जाते हैं। चतुरस्र, अर्थात् चौकोना, त्रिकोण अर्थात् तिकोना एवं वृत्त अर्थात् गोलाकार, उन तीनों कुंडोंमें गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्निकी स्थापना कर पूजा की जाती है ॥ २३ ॥ २४ ॥

मारण, आकर्षण व वश्य कर्मोमें त्रिकोण कुंड होना चाहिये। विद्वेषण और उच्चाटन कर्ममें गोलकुंड होना चाहिये एवं अन्य शांति आदि कर्मोमे चौकोना कुण्ड कहा गया है ॥२५॥

उन कुंडोंका प्रमाण इस प्रकार हो। उनकी लंबाई, चौडाई और गहराई एक हस्त प्रमाण हो, और उनमे तीन कटनियां बनाई जावे। पहिली कटनीकी उंचाई और चौडाई पांच अंगुल, दूसरी कटनीकी चार अंगुल और तीसरी कटनीकी तीन अंगुल प्रमाण कही गई है ॥ २६ ॥ २७ ॥

सकलीकरण क्रियासे परिशुद्ध मंत्रसाधक शुद्ध अन्तरीय (धोती) उत्तरीय (दुपट्टा) एवं यज्ञोपवीत पहनकर होम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्यमें पल्यंकासन बद्ध होकर बैठे, और अपने इष्ट कार्यकी सिद्धिके लिए विधिपूर्वक होम क्रिया करें ॥ २८ ॥ २९ ॥

होम कार्यमें पलाश (ढाक) की सूखी लकडी मुख्यतया होनी चाहिये । यदि वह न मिले तो क्षीरवृक्षोंकी (पीपल आदि) सूखी पवित्र लकडियोंका उपयोग करना चाहिये । किसी विशिष्ट कार्यके लिए विशिष्ट लकडियोंका निर्देश न हो तो सामान्यतया इसी विधानसे कार्य लेना चाहिये । सृक्, स्रुवा, और सफेद लालचंदनकी लकडी होम कार्यमें आवश्यक है : तथा शमी वृक्षकी लकडी भी ग्राह्य है । तथा पत्रोमें भी पीपल पत्र लेना चाहिये, पीपलका पत्र न मिलनेपर पलाश (ढाक) का पत्र लेना चाहिये ॥ ३० ॥ ३१ ॥

होम कार्यमें जो लकडियां उपयुक्त की जाती हैं, वे दूधवाले वृक्षोंकी सूखी, पवित्र व निर्जंतुक हों, वही लकडियां सर्व होम कार्योंमें ग्रहण करने योग्य हैं ॥ ३२ ॥

होम कार्यमें दूध एक सेर, घी एक सेर एवं मिश्रित होम द्रव्य दो सेरके प्रमाणसे लेना चाहिये ॥ ३३ ॥

वधकर्म, विद्वेषण कर्म एवं उच्चाटन कर्ममें समिधा आठ अंगुल प्रमाण, पुष्टि कर्ममें ९ अंगुल प्रमाण, शांति, आकर्षण, वशीकरण एवं स्तंभन कर्ममें बारह अंगुल प्रमाण लेना चाहिये । मारणादि अशुभ कर्मोंके निमित्त होम करते समय अशुभ द्रव्योंसे अशुभ भावोंसे क्रोधित मुद्रासे होम करना चाहियें । शुभ कर्मोंमें शुभ द्रव्योंसे प्रसन्नचित्तसे होम करना चाहियें ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल, गंध, अक्षत, पुष्प, चरु, दीप, धूप, फल, इन अष्ट द्रव्योंसे क्रमशः पूजा कर अपने इष्टमंत्रका जाप्य करते हुए अग्निकुमारकी पूजा करें। अग्नि संधुक्षणके अनंतर अग्निकुमारकी पूजाके बाद आज्याहुति करें। तदनंतर घी, दूध गुडके साथ १०८ समिधावोंसे समिधाहुति करें। प्रत्येक आहुतिके बाद पुनः आज्याहुति करें ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

तदनंतर स्रुचाके द्वारा मिश्रित आहुति द्रव्योंसे जाप्य मंत्रका उच्चारण करते हुए आहुति करें। समिधाहुतिकी संख्या १०८ कही गई है। क्षीर, घृत, और गुड यह तीन मधुर द्रव्य माने गये हैं। इस प्रकार संहिता शास्त्रमें प्रतिपादित क्रमके अनुसार होमविधिको समझकर होम करना चाहिये ॥३८॥३९॥

उपर्युक्त विधियोंको समझकर जो साधक विधिके अनुसार एक मंत्रको भी सिद्ध कर लेता है, उसे अन्य मंत्र अल्पश्रमसे ही सिद्ध हो जाते हैं ॥ ४० ॥

मंत्र साधनमें दिशा, काल, मुद्रा, आसन, पल्लव, वस्त्र, पुष्प, योग, माला, अंगुलि, हस्त एवं मंडलोंका विचार रखना आवश्यक है। मंत्रसाधनके कार्य आठ प्रकारके हैं। अर्थात् आठ प्रकारके उद्देश्योंको सामने रखकर साधक मंत्रसाधन करता है। वे इस प्रकार हैं। १ स्तंभन, २ विद्वेषण ३ आकर्षण ४ पौष्टिक ५ शांति, ६ उच्चाटन ७ वश्य ८ मारण इन विभिन्न कर्मोंके लिए विभिन्न प्रकारकी दिशा काल आदि सामग्रियोंका होना आवश्यक है। जो कि निम्नलिखित कोष्टकसे स्पष्ट किया गया है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंत्रसाधनमें उपयुक्त दिशाकाल मुद्रा आदिका विवरण

कर्म	दिशा	काल	मुद्रा	आसन	पल्लव	वस्त्र	पुष्प	योग	माला	हस्त	अंगुलि	मंडल
शांति	पश्चिम	अर्धरात्रि	ज्ञान	पद्मासन	स्वाहा	श्वेत	श्वेत	पूरक	स्फटिक	दक्षिण	मध्यम	जल
पुष्टि	नैऋत्य	प्रभात	ज्ञान	स्वस्तिक	स्वधा	श्वेत	श्वेत	पूरक	मोती	दक्षिण	मध्यम	जल
वश्य	उत्तर	प्रातः	कमल	पद्मासन	वषट्	लाल	लाल	पूरक	प्रवाल	वाम	अनामिका	अग्नि
आकर्षण	दक्षिण	प्रातः	अंकुश	दडासन	वौषट्	लाल	लाल	पूरक	प्रवाल	वाम	कनिष्ठिका	वाम वायु, अग्नि
स्तंभन	पूर्व	प्रभात	शंख	वज्रासन	ठ ठ	पीत	पीत	कुंभक	स्वर्णमणि	दक्षिण	कनिष्ठिका	दक्षिणवायु पृथ्वी मंडल
मारण	ईशान	संध्या	वज्र	भद्रासन	घे घे	काला	काला	रेचक	पुत्रज वं	दक्षिण	तर्जनी	वायु
विद्वेषण	आग्नेय	मध्यान्ह	प्रवालमुद्रा	कुक्कुटासन	हु	धूम्र	धूम्र	रेचक	काला	दक्षिण	तर्जनी	वायु
उच्चाटन	वायव्य	अपरान्ह	प्रवाल	कुक्कुटासन	फट्	धूम्र	धूम्र	रेचक	काला	दक्षिण	तर्जनी	वायु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौकोने पीतवर्णयुक्त अन्योन्य वज्रविद्ध चारों कोनोमें ल बीजसे युक्त मंडलको पृथ्वीमंडल कहते हैं ॥ ५२ ॥

कमलके द्वारा जिसका मुख सुशोभित हो, ऐसे कलशका आकार बनाकर चारों कोनोमें व और प इन जलबीजोंको लिखें। उसे आचार्य जलमंडल कहते हैं ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

त्रिकोण आकार बनाकर तीनों कोनोंपर स्वस्तिक बनावें और कोनोमें अग्निबीज ओं ओं ओं ओं रं रं रं र इस प्रकार लिखें, वह लाल वर्णका अग्निमंडल कहलाता है ॥ ५५ ॥

वृत्ताकार बनाकर वायुबीज य और स्वा उसमें लिखें। वह काला वायुमंडल कहलाता है ॥ ५६ ॥

इस प्रकार चार प्रकारके मंडल पृथ्वी, जल, अग्नि और वायुके नामसे प्रसिद्ध हैं। और ल व र य इन बीजाक्षरोंसे युक्त हैं। उन्हे समझकर मंडल निर्माण करना चाहिये ॥ ५७ ॥

उग्रमंत्रके अन्तमे यदि नमः यह पल्लव लगा दिया जावे तो वह मंत्र सौम्य हो जाता है। इसी प्रकार यदि सौम्य मंत्रके अन्तमें फट् पल्लव लगा दिया जावे तो वह मंत्र उग्र बन जाता है। अत एव पल्लवोंकि परिवर्तनसे मंत्रोंको शांति पुष्टि मारणोच्चाटन आदि कर्मोमें उपयुक्त कर लेना चाहिये ॥ ५८ ॥

मंत्र साधकको उचित है कि वह मंत्रसाधन करते समय स्नानकर शुद्ध वस्त्रको धारण कर निर्जंतुक स्थानमे जप होमादिके लिए बैठे और शुचिताके साथ जप होमादि करें ॥ ५९ ॥

इति मंत्रसाधनविधानम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरजयमाला

जय पुरुपरमेश्वर ! सुरनुत जय जय ।
जय परमानंद सुखास्पद जय जय ॥ १ ॥
जय अजित जिनाधिप ! अचलित जय जय ।
जय विजितमनोभव ! भुजबल जय जय ॥ २ ॥
जय शभवगंभीरांबुधे ! जय जय ।
जय शुंभितनुतकीर्तीश्वर ! जय जय ॥ ३ ॥
जय अभिनंदनजिनवल्लभ ! जय जय ।
जय इभरिपुपीठाधिष्ठित ! जय जय ॥ ४ ॥
जय सुमतिजिनाधिप ! सुरनुत जय जय ।
जय जय कुमतांबुधिवडवानल ! जय जय ॥ ५ ॥
जय पद्मप्रभपरमेश्वर ! जय जय ।
जय पद्मापद्मसमीरण ! जय जय ॥ ६ ॥
जय श्रीमत्सुपार्श्वजिनाधिप ! जय जय ।
जय निरुपमगुणगणनिलय ! श्री जय जय ॥ ७ ॥
जय चंद्रप्रभपरमेश्वर ! जय जय ।
जय रुंद्रमुनीश्वरवंदित ! जय जय ॥ ८ ॥
जय पुष्पदंतजिनपुंगव ! जय जय ।
जय पुष्पापुष्पसमीरण ! जय जय ॥ ९ ॥
जय शीतलजिनपरमेश्वर ! जय जय ।
जय भूतलपतिनुतवंदित ! जय जय ॥ १० ॥
जय श्रेयान् श्री परमेश्वर ! जय जय ।
जय आयातमुक्तिश्रीयुत ! जय जय ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय वासुपूज्यजिनवल्लभ ! जय जय ।
जय भासुरभव्यनिवास भो ! जय जय ॥ १२ ॥
जय विमल ! श्रीरमणीश्वर ! जय जय ।
जय द्युमणिसहस्रद्युतियुत ! जय जय ॥ १३ ॥
जय अनघानंतचतुष्टय ! जय जय ।
जय घनकर्माटविपावक ! जय जय ॥ १४ ॥
जय धर्मजिनेश्वर ! निर्मल ! जय जय ।
जय धर्माचलनिभनिश्चल ! जय जय ॥ १५ ॥
जय शांतिजिनेश्वर ! शाश्वत ! जय जय ।
जय संततबोधनिवासक ! जय जय ॥ १६ ॥
जय सुललितकुंथुजिनेश्वर ! जय जय ।
जय जलजनाभसुत वंदित ! जय जय ॥ १७ ॥
जय अर्‌जिन ! सद्वचनामृत ! जय जय ।
जय परमश्रीकुचकुंकुम ! जय जय ॥ १८ ॥
जय मल्लिजिनेश्वरवल्लभ ! जय जय ।
जय सल्ललितोन्नतवंदित ! जय जय ॥ १९ ॥
जय मुनिसुव्रतजिनकुंजर ! जय जय ।
जय मुनिवृंदारक वंदित ! जय जय ॥ २० ॥
जय नमित सुरेश्वर ! नमिजिन ! जय जय ।
जय क्रमकल्याणसुपंचक ! जय जय ॥ २१ ॥
जय सुरपूजित नेमीश्वर ! जय जय ।
जय हरिवंशांबुधिहिमकर ! जय जय ॥ २२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय श्रीमत्पार्श्वजिनाधिप ! जय जय ।
जय कामदेवमदभंजन ! जय जय ॥ २३ ॥
जय वर्धमानजिनवल्लभ ! जय जय ।
जय सद्धर्मप्रतिपालक ! जय जय ॥ २४ ॥
जयनाथ ! जयजिनेश्वर ! जय जय कंदर्पदर्परिपुकुलमथन !
जय नष्टघातिकर्मभर ! जय जय देवेंद्रवृन्दवंदितचरण ॥ २५ ॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतींद्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ॥१॥
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशं ।
दुर्भिक्षं चोरमारि क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके ।
जैनेंद्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायी ॥ २ ॥
प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वंतु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥ ३ ॥
अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामंडलं दुंदुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ ४ ॥

कमलवकुलमालोत्फुल्लकल्हारमल्लि- ।
कुमुदकुरवकोद्यद्यूतिकाकेतकीनां ॥
मरुवकदमनानां मालतीचंपकानां ।
जिनचरणपुरस्तादंजलिं प्रोत्क्षिपामि ॥

इति—भद्रं भूयात्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Printed By
V. P. SHASTRI
at Kalyan Power Printing Press
75, East Mangalwar Peth,
SHOLAPUR.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi